काश, ऐसा हो !

नाट्य सग्रह

सूरजसिह पवार

पवार प्रकाशन
रामपुरिया कॉलेज के पीछे बीकानेर (राज)
फोन 0151 2206057

आदरणीय ज्येष्ठ भ्राताश्री

स्व. विजयसिंह पंवार

को असीम श्रद्धाभाव से समर्पित
जिन्होने मुझे रगकर्म से जुडने के लिए
प्रेरित किया तथा समय समय पर
नाट्य प्रदर्शनो के लिए आर्थिक मदद
भी करते रहे, उसी का परिणाम है कि मै रगजगत्
के साथ साथ साहित्यजगत् से भी जुड पाया।

नाटको मे लिए गए पात्र महज लेखक की अपनी कल्पना मात्र हैं किसी व्यक्ति विशेष को लेकर इनकी सरचना नहीं की गई है। फिर भी बदलते युग मे घटनाओ मे समानता आ जाना सयोग मात्र होगा। लेखक का उद्देश्य अथवा अभिप्राय किसी जीवित या मृत व्यक्ति पर आक्षेप करना नहीं है और इस अप्रत्याशित सयोग के लिए वह उत्तरदायी नहीं है।

— प्रकाशक

भूमिका

रगकर्मी निर्देशक और नाटककार के रूप मे श्री सूरजसिह पवार किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उन्होने हिन्दी और राजस्थानी भाषा मे अनेको नाटकों की रचना कर इस विधा को नई ऊर्जा प्रदान की है। 'सौन्दर्य की साझ आधी रात के बाद मण्डी मुर्दो की पदमादेवी आप क्या करते ? स्वप्नद्रष्टा डूगजी जवारजी व पृथ्वीराज पीथल इत्यादि नाटय सग्रहो के माध्यम से आपने हिन्दी एव राजस्थानी नाटको के लिए नई भावभूमि तैयार की है।

आलोच्य कृति 'काश ऐसा हो ? मे भी तीन हिन्दी नाटक सगृहीत हैं। अकलमन्द' 'वीरचक्र' तथा 'काश ऐसा हो।

अकलमन्द नाटक श्री पवार के ही राजस्थानी नाटक 'सुहावणा डूगर से प्रभावित है। हास्य व्यग्य के नाटक लिखने मे वे सिद्धहस्त हैं किन्तु हास्य के माध्यम से जीवन की विविध समस्याओ से टकराना वे नहीं भूलते। श्री पवार के नाटक समस्याप्रधान होते हैं। दहेज प्रथा बाल विवाह पारिवारिक विघटन स्वार्थवृत्ति के दुष्परिणाम इत्यादि अनेक समस्याओ को लेकर वे पाठको तथा दर्शको को बाधे रखते हैं। प्रस्तुत नाटक मे भी हास्य व्यग्य के माध्यम से दहेज के अभिशाप को बखुबी उकेरा गया है।

अकलमन्द' नाटक कई प्रश्न खडे करता है। घर का मुखिया यदि कजूस हो तो सतान भी प्राय उसी का अनुसरण करती है। भिखारी और गणेश का वार्तालाप पिता--पुत्र दोनों की कृपणता का ज्वलत उदाहरण है। उधर पुत्र भी भिखारी को टका सा जवाब देता है--'जब भी जाता हू तो आटे की चक्की वाला बोल देता हैं लाइट नहीं है भिखारी पीने को पानी मागता है तो गणेश का सटीक उत्तर है-- अरे ओ बेवकूफ जब घर में लाइट ही नहीं है तो पानी कहा से आएगा।

ये चटपटे सवाद पात्रों की मन स्थितियो को अकित करते हुए दर्शको को भी बाधे रखते हैं।

श्री पवार के नाटको में सभी पात्रों की अपनी विशिष्ट भूमिकाए होती हैं अत कई बार नायकत्व का सेहरा किसी के सिर पर नहीं बधता। यही स्थिति 'वीरचक्र नाटक की है। यहा भी कुलवीर और राहुल दोनो को

काफी महत्त्व दिया गया है यद्यपि राहुल ही प्रमुख पात्र है। इस नाटक मे भी कई समस्याओ को उठाया गया है–बेरोजगारी प्रेमप्रसग जात–पात युद्ध की समस्या।

शिक्षित बेरोजगारी को कुलवीर के सवादो मे व्यक्त किया गया है–

बेकारी मे वो सब मुझे काटने को दौडते हैं। क्या यही अरमान लेकर मेरे पिताजी ने अपना पेट काटकर मुझे तालीम दिलवाई थी ?

नाटक मे आकस्मिकता का तत्त्व भी महत्त्वपूर्ण होता है। एसे तत्त्व वीरचक्र नाटक मे काफी हैं। कुलवीर को अचानक नौकरी मिलना राहुल को अपने असली पिता का पता चलना श्रीति के पिता द्वारा लडके की माताश्री से एक लाख रुपये की माग इत्यादि घटनाए हैं। इस नाटक क वस्तु विन्यास मे रोचक पडाव है। नाटक का उपसहार देशप्रेम से ओत प्रोत है।

तीसरा नाटक है–'काश ऐसा हो । नाटक का कथानक लोभी सेठ दीवानचद के इर्द–गिर्द फैला हुआ है। यहा सूत्रधार के माध्यम से वस्तु का श्रीगणेश करने के बाद नाटककार नौकर सुबीराम पुत्र विजय व पुत्री ममता से साक्षात्कार करता है। श्री पवार के नाटको मे नोकरो की अहम् भूमिका रहती है। नाटक का अतिम भाग अनेक रहस्यो का उद्घाटन कर दर्शको पर विशेष प्रभाव डालने मे समर्थ हुआ है।

इन रहस्या का उद्घाटन करते हुए यहा इतना कह देना ही पर्याप्त हागा कि श्री पवार के पास उर्वरा कल्पना–शक्ति और जनसामान्य का मनोविज्ञान समझने की अपार क्षमता है व समस्याओ का निदान डॉ रामविलास शर्मा के शब्दो मे 'क्रातिकारी हथौडे से नहीं करते अपितु एक निपुण चिकित्सक की तरह उचित पथ्य को प्रस्तुत करके करते हैं। यही कारण है कि श्री पवार के समस्या–मूलक नाटक समृद्ध रग–कल्पना सृजनात्मक प्रतिभा की विलक्षणता तीखी विडम्बनापूर्ण स्थितिया कथा–शृखला के मोडो तथा पात्रानुकूल भाषा के कारण सम्प्रेषणीयता के गुणो से भरे–पूरे हैं।

मैं व्यग्यकार तथा नाटककार श्री सूरजसिह को बधाई देता हू।

डॉ मदन केवलिया
'प्रतिमा सी 68 सादुलगज
बीकानेर–334 003 (राज)

लेखकीय

अद्यतन रगमच ही मेरी कर्मभूमि और मेरा कार्यक्षेत्र रहा है। रही है। अपने-आप को अभिव्यक्त करने के लिए मैंने इसका प्रश्रय लिया।

मचन की दृष्टि से उपयुक्त नाटको का अभाव तथा अपनी बात कहने की विषयवस्तु प्राप्त नहीं होने के कारण मैं सृजन की ओर उन्मुख हुआ।

रगमच ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कितनी ही ऊचाई पर बैठे व्यक्ति की अच्छाइयों और बुराइयो को तथा समाज मे फैली अनेको विसगतियो का सागोपाग दिग्दर्शन कराया जा सकता है। रगमच वो आईना है जो कभी धुधला नहीं होता।

मैं और आप इस बात से भलीभाति परिचित हैं कि फिल्मो और नाटको अथवा किसी साहित्यिक कृति को देख और पढकर यह समाज सुधरने वाला नहीं है। फिर भी आलोक की एक क्षीण रेखा है कि परिस्थिति से बधकर यदि दर्शक ऑसू की दो बूद बहाने को विवश हो जाता है तो उसी में लेखन की सार्थकता है। मानव हृदय को उद्वेलित करना ही मेरा ध्येय है।

आज आपाधापी के इस युग मे फिल्मो और दूरदर्शन के प्रभाव से रगमच समाप्तप्राय सा हो गया है। पर इसका दूसरा पहलू भी उजागर हो रहा है। दूरदर्शन और फिल्मो मे दिखाई जाने वाली फूहडता और नग्नता से दर्शक ऊब गया है और उसका रुझान रगमच की ओर बढने लगा है।

साहित्यकारो और रगकर्मियो को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

मेरा ऐसा मानना है कि सरल और सहज भाषा मे अच्छे विषय पर कलम उठाई जाय तो सार्थक परिणाम निकल सकते हैं और

रगमच अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन प्रतिस्थापित कर सकता है।

समाज की विसगतियों पर प्रहार करना मैं अपना धर्म समझता हूँ। बिच्छू का धर्म व स्वभाव डक मारने का है सृजनधर्मी का धर्म है सृजन करना—यही मैं कर रहा हूँ।

मनोरजन की दृष्टि से या सस्ती वाह वाही लूटने अथवा बौद्धिक विकास के लिए न तो सृजन करता हूँ, न ही मचन करता हूँ। समाज मे फैली विषमताओ को उजागर कर जनमानस को झकझोर देना ही मेरा उद्देश्य है।

कहा है—

करत करत अभ्यास के जडमति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

एतदर्थ भिन्न भिन्न रगो मे विषयवस्तु की पुनरावृत्ति करता हूँ। इस नाटय सग्रह के तीनो नाटको मे हास्य मिश्रित गम्भीरता से अपनी बात कहने का प्रयास किया है।

दर्शक व पाठकगण यदि कुछ क्षणो के लिए ही अपने गिरेबान मे झाकने को विवश हो जाय तो इसी मे मेरे लिखने की सार्थकता होगी।

सूरजसिह पवार

अकलमन्द

प्रथम दृश्य

(सुबह का समय। रेडियो पर धुन बजती है और भजन आता है। कमरे मे गद्दा लगा है जिस पर गणेश नाम का लडका जो जरा मन्दबुद्धि का है सो रहा है। कुछ समय बाद बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाज)

भिखारी माँ सा ! ओ माँ सा।

गणेश अरे ! भाई कौनसी मासा है यहाँ ?

(दरवाजे पर दस्तक के साथ आवाज)

भिखारी ओ बाईसा ! बाईसा ओ।

गणेश अरे ! कौन है बाईसा का भाईसा ?

(दरवाजा खटखटाने के साथ)

भिखारी बाबूसा ! ओ बाबूसा।

गणेश मरे थारा भुआसा। कौन दरवाजा तोड रहा है सुबह सुबह ?

(दरवाजा खटखटाने के साथ)

भिखारी माई ! ओ माई।

गणेश खावै तेरे को साई। क्यो परेशान कर रहा है ?

(दरवाजे पर फिर दस्तक)

तो ऐसे तू नहीं मानेगा कुछ तो दवाई पानी करनी ही पडेगी। ठहरजा मैं आ रहा हूँ।

(गणेश उठता है और दरवाजा खोलता है सामने एक भिखारी को खड़ा देखकर)

अरे ! भिखारीमलजी आप ? सुबह सुबह ? क्या सब

खेरियत तो है ना ? अर आप बाहर क्यो खडे हैं भीतर आइए ना ? आइए आइए अन्दर आ जाईए बाहर खड सर्दी लग जाएगी। अरे ! शर्माइए मत अन्दर आ जाइए मैं घर मे अकेला हूँ।

(बाहर की ओर से फटेहाल एक हाथ मे कटोरा तथा दूसरे हाथ मे कुल्हड लिए एक भिखारी कमरे मे प्रवेश करता है।)

हुकम कीजिए सुबह–सुबह कैसे आना हुआ आपका ? मेरा मतलब इस कुल्हड मे क्या है ?

भिखारी गरम चाय है साहबजी।

(चाय का कुल्लड भिखारी के हाथ से लेते हुए।)

गणेश इसकी आपने क्यो तकलीफ की ?

(गणेश चाय पीते पीते बोलता है।)

कहिए मै आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

भिखारी कोई ठण्डी बासी रोटी हो तो दीजिए।

गणश देखिए ! भिखारीमलजी हम जात के जेनी हैं। इसलिए ठडी बासी रोटी रखते नहीं हैं। और कोई सेवा हो तो बताओ।

भिखारी ठडी नहीं तो गरम रोटी दे दीजिए।

गणेश अरे लगडे आम की गुठली ! इतनी जल्दी गरम रोटी तुम्हारे लिए तुम्हारे बाप ने बनाई है ?

भिखारी फिर दो मुटठी आटा ही डाल दीजिए बाबूसा ?

गणेश आटा पिसने के लिए दिया हुआ है तीन दिन हो गए।

भिखारी तीन दिन ? सुबह सुबह क्यो झूठ बोल रहे हैं बाबूसा ?

गणेश तो झूठ रात का बोला जाता है ?

भिखारी इतनी बढिया कोठी और घर मे दो मुट्ठी आटा नहीं है ?

गणेश तो कोठी को तुम्हारे लिए आटे से भरकर रखू ? जब भी जाता हूँ, आटे की चक्की वाला बोल देता है लाइट नहीं है।

भिखारी अच्छा बाबूसा प्यास लग रही है जरा एक गिलास पानी तो पिला दीजिए।

गणेश अरे ! बे मौसम की गाजर जब लाइट ही नहीं है घर मे तो पानी कहॉ से आएगा ?

भिखारी अच्छा भैया कोई टूटी फूटी चप्पल जूती हो तो दीजिए न धूप मे पैर झुलस जाते हैं।

गणेश देखिए भिखारीमलजी चप्पल टूटती है या जूती फटती है तो मेरा बाप मन्दिर जाता है और जूती चप्पल बदल लाता है।

भिखारी कोई फटा पुराना कुर्ता कमीज

(बीच मे बोलता है)

गणेश कुर्ता कमीज या पायजामा फटते ही मेरा बाप उसे होली खेलने के वास्ते सभाल कर रख देता है।

भिखारी बाबूसा कुछ तो दीजिए सुबह सुबह ना तो मत कीजिए बडी आस लेकर आया हूँ।

गणेश अब सुबह सुबह तुम्हे मैं क्या दूँ ब्रुश है तुम्हारे पास ?

भिखारी ब्रुश ! कैसा ब्रुश बाबूसा ?

गणेश मेरा मतलब पहले हम दोनो कोलगेट कर लेते हैं।

भिखारी मेरे तो मुँह मैं दात ही नहीं हैं बाबूसा भगवान जाने आज मैं किसका मुँह देखकर घर से निकला था।

गणेश मैं बतलाऊ जरूर आईना देखकर निकला होगा।

(उठते हुए)

भिखारी अच्छा भैया भगवान तुम्हारा भला करे।

गणेश देखिए भिखारीमलजी अगर आपके कहने पर भगवान भला करता हो ना तो पहले तुम अपना ही भला करा लेना।

(हाथ जोडते हुए)

भिखारी एक बात बोलू बाबूसा ?

गणेश एक ही बात बोलना वरना यह कटोरा छीन लूगा।

(भिखारी हसने लगता है भिखारी को हसते देखकर गणेश भी हसने लगता है।)

भिखारी मुझ गरीब के साथ साथ तुम क्यो हसे बाबूसा ?

गणेश पहले तुम बतलाओ तुम किसलिए हसे ?

भिखारी हसू नहीं तो मेरे बाप को रोऊ। घर म ठडी बासी रोटी नहीं हे। पीने को पानी नहीं हे। दो मुट्ठी घर मे आटा नहीं हे टूटी फूटी चप्पल नहीं है। फटा पुराना कुर्ता नहीं है। ता घर मे अकेले पडे क्या कर रहे हो भेया ? आजाओ साथ ही भीख मागने चलते हैं।

गणश दखिए भिखारीमलजी अभी तो मुझे नींद आ रही ह दोनो थोडी देर ठहर कर *(जाते जाते)*

भिखारी अमर हो जा बाबू।

गणेश में ता अमर हा जाऊगा तुम अमर बकरा हा जा।

(भिखारी का बाहर जाना कुछ क्षणो बाद फिर से दरवाजा खटखटाने की आवाज)

अरे भाई दरवाजा क्यो तोड रहे हो ?

(गणश अपने पिताजी का आवाज लगाता है)

बाप ओ बाप बाप रे।

(अन्दर से महादेवप्रसाद का प्रवेश)

बाप कोई आदमी तीन घण्टे से अपना दरवाजा तोड रहा है।

(मारते हुए।)

महादेव हरामखोर इक्कीस तारीख को इक्कीस वर्ष का हो जाएगा और बोलने की तमीज नहीं ?

(गणेश जोर से रोता है। अन्दर से पार्वती की आवाज।)

पार्वती अरे ! सुबह सुबह मुर्गे की तरह कौन बाग मार रहा है ?

(गणेश के बाल पकडकर)

महादेव अगर आइन्दा बाप बोला तो पछाडकर मार डालूगा।

(पार्वती प्रवेश करके बीच मे पडते हुए)

पार्वती अजी ! क्यो मार रहे हो मेरे छोरे को ?

महादेव समझा इस गधे को।

(तेज स्वर मे)

पार्वती — ये गधा अपने बाप पर गया है मैं किस किस को समझाऊ। क्यो क्या जुल्म कर दिया इसने ?

महादेव — इतना बडा साड हो गया और बोलने की तमीज नहीं।

पार्वती — अब साड हो या भाड। आदमी जो बोता है वो ही चीज काटता है। यहा आ बेटे। मुझे बतला क्या हुआ ?

गणेश — कोई आदमी तीन घण्टे से अपना दरवाजा तोड रहा था। मैंने उससे पूछा तुमको मेरी मा से मिलना है या मेरे बाप से ?

(मारते हुए)

महादेव — फिर तुमने मुझे बाप बोला ?

पार्वती — तुम इसके बाप नहीं हो क्या ?

महादेव — बाप हूँ, परन्तु जब देखो बाप बाप बाप।

पार्वती — तो क्या बोले तुमको ? दादाजी या नानाजी ?

महादेव — बाबूजी बाबूसा पापा पापाजी डैडी डेड और कुछ नहीं तो खाली बापू ही बोल दे।

पार्वती — लेकिन बापू वाले गुण कहाँ है तुममे उनको तो पूरा राष्ट्र ही बापू बोलता था।

महादेव — हरामी कहीं का जब देखो बाप बाप बाप।

पार्वती — अब अनपढ आदमी तो ऐसे ही बोलेगा। अगर पापा या डैडी बोलाना था तो पढाया क्यो नहीं इसे ?

गणेश — अरे पडा क्या है पढने मे ? पढे–लिखे लाखो लोग बेकार घूम रहे हैं।

(गणेश बीच मे बोलता है)

गणेश — तो तू क्यो पढा बाप ?

(मारते हुए)

महादेव — फिर तुमने मुझे बाप बोला। बोल बोलेगा बाप ?

(बीच मे पडते हुए)

पार्वती — मेरी समझ मे नहीं आ रहा है कि बाप बोलने मे तुमको शर्म

क्यो लगती है। भला समझो कि मैं तुरुहें खसम नहीं बोलती।

महादेव हा हा तुम मुझ खसम ही बाला करो।

पार्वती ऐजी सुणोजी बोलना अच्छा लगेगा तुम्हे ? मेरे पीहर मे तो एजी काने आदमी को बोलत है।

महादेव हा हा तुम मुझे काना ही बोला कर।

(गणेश नाचते हुए)

गणेश कानिया कानिया बोल तेरी मॉ बजावै ढोल

(मारते हुए)

महादेव कानिया का बाप अन्दर जा और मेरा लाल कुर्ता और पीला पजामा लकर आ।

गणेश पीले पजामे के साथ हरे रग की पगडी भी

(बिगडते हुए)

महादेव अरे हरामखोर तेरा बाप तो जिन्दा है। हरे रग की पगडी किसके लिए बाधू ?

(गणेश अन्दर जाता है)

पार्वती सुबह सुबह लाल पीला पहनकर किसको रिझाने जा रहे हो ?

महादेव तेरी मॉ

(बीच मे बोलते हुए)

पार्वती हा हा पधारो वो ऊपर बैठी इन्तजार कर रही है तुम्हारा।

महादेव क्या बोला तुमने ?

पार्वती क्यो इतने जल्दी कानो के परदे फट गए ?

महादेव मेरे कानो के परदे तो तुम्हे इस घर मे लेकर आया था न उसी दिन फट गए थे।

पार्वती तो अब कौन से मिये मर गए या रोजे घट गए ? कोई सुन्दर–सी मेरे लिए सौत ले आओ वो वापस सिल देगी।

महादेव तुम मुझे दूसरी लाने के लिए ताना मार रही हो ? जानती हो सौत माटी की भी बुरी होती है।

पार्वती तुम लेकर तो आओ–दोनो को पैट्रोल छिडककर जिन्दा

 ऐसा हो।

जला डालू।

(गणेश का धोती लेकर प्रवेश)

महादेव अरे बेवकूफ तुमको लाल कुर्त्ता और पीला पजामा लाने को बोला था। यह धोती लेकर क्यो आया है ?

गणेश पजामे मे नाडा नहीं था।

महादेव नाडे को कौन खा गया ?

पार्वती नाडे के बगैर फासी कैसे खाएगे ये ?

गणेश मेरी लुगी से खा लेगे। क्यो बाप ?

(मारते हुए)

महादेव हरामखोर फिर तुमने मुझे बाप बोला।

(गणेश बाहर भाग जाता है।)

पार्वती मैं गणेश को लेकर मदिर जा रही हूँ।

महादेव अरे मर ना कुछ देर तो सर को आराम मिलेगा।

(पार्वती का प्रस्थान व मूलचन्द का प्रवेश)

अरे हरामखोर आ गया तू ? अगर नौकरी से जी भर गया हो तो तेरा हिसाब कर दू ?

मूलचन्द नौकरी से तो जी नहीं भरा सेठजी लेकिन आपकी इस रोज रोज की किच किच से जी भर गया है।

महादेव क्या बोला तू ?

मूलचन्द अरे सेठजी । मेरे दादा परदादा आपके यहॉ नौकरी करते करते यहीं मर गए तो मुझे अब कहा जाना है। मुझे भी यहीं मरना है।

महादेव ठीक है यहा बैठ और थोडा मेरे माथे मे खुजली कर।

(मूलचन्द पास मे बैठकर सर मे मालिश करते हुए)

मूलचन्द सेठजी लोग कहते हैं कि पैर मे खुजली होने पर यात्रा करनी पडती है। हाथ मे खुजली आने पर पैसा आता है और सर मे खुजली आने पर जूते खाने पडते हैं। क्या इस बात मे कुछ सच्चाई है ?

(बिगडते हुए)

महादेव अरे ओ हरामखोर ! तुम मेरा नाम जानते हो न ?

मूलचन्द नाम क्या मैं आपकी सात पीढी का जानता हूँ सेठजी। आज मैं दस मिनट देर से आ गया और आप कपडो से बाहर हुए जा रहे हैं। समय पर कभी तनख्वाह ?

(बात काटते हुए)

महादेव मुँह बंद रख और हाथ चालू रख।

मूलचन्द एक बात पूछू सेठजी ?

महादेव क्या है ?

मूलचन्द आपके पिताजी और दादाजी के इस शहर मे पत्थर तैरते थे और आपके घर मे न साइकिल है न रेडियो न टी वी है न ट्राजिस्टर न कूलर है न फ्रीज न बैठने को सोफा है न पलग न नोकर है न चाकर ?

(बिगडते हुए)

महादेव तो तू मेरा बाप है ?

मूलचन्द बाप तो नहीं हू सेठजी पर इस गद्दे को होली दीपावली झाडता हूँ। इसमे रुई तो कम है और धूल ज्यादा

महादेव बोल बोल चुप क्यो हो गया ?

मूलचन्द अब वर्माजी को देखलो घर के अन्दर चार चार बजरी ढोने के ट्रक खडे हैं।

महादेव चाटू ट्रको को। किसी से दुश्मनी निकालनी हो तो उसे ट्रक दिला दो या उसे चुनाव मे खडा कर दो।

मूलचन्द यह सब कहने की बाते है सेठजी। चुनाव से पहले यह बसिया क्या था ? एक चुनाव जीता और बेटी की शादी कर डाली। दस हजार कार्ड छपवाकर कुत्ते बिल्लो को बाटकर लाखो रुपये बान इकट्ठी कर ली। इसलिए मेरा कहना मानो और

महादेव देख रे मैं तेरे कहने से न तो ट्रक लाऊगा और न चुनाव लड़ूगा। चुनाव लडू और जिसका मुँह नहीं देखना चाहूँ

उसकी

(बीच मे)

मूलचन्द आप समझ नहीं रहे हैं सेठजी। सिर्फ एक महीने जनता को हाथ जोड लो इद आव तो मस्जिद के आगे जाकर खडे हो जाओ और होली दीपावली राम राम सा पगे लागू सा बस आपके वोट पक्के। उसके बाद चार साल ग्यारह महीने आप आगे और जनता पीछे और कार के आगे झण्डी लग गई तो पौ बारह पच्चीस घर म टी वी कूलर सोफा मारुती--सब पलक झपकते ही आ जाएगे।

महादेव तू इधर आ और मेरे सामने बैठ।

मूलचन्द हुकम कीजिए।

महादेव ध्यान से सुन। रगीन टी वी कूलर फ्रीज वाशिग मशीन मिक्सी मारुती बाजार से खरीद कर लाए तो कितने पैसे लगेगे जरा बतला तो ?

मूलचन्द मुझे क्या मालूम सेठजी। ये तो लाखो का सौदा हो गया।

महादेव अगर ये सब चीजे हमे कोई मुफ्त मे दे दे तो ?

मूलचन्द मुफ्त म ? ऐसा कौन दानी है सेठजी मुझे भी उसका नाम बताओ। मैं अभी जाकर लाइन में खडा हो जाता हूँ।

महादेव अरे बेवकूफ आज एक पार्टी बगलोर से गणेश को देखने आ रही है और मारुती साथ ला रही है।

मूलचन्द अरे ! सेठजी आप गणेशबाबू की शादी कर रहे हैं ?

महादेव क्यो गणेश मर्द नहीं है ?

मूलचन्द मर्द तो गणेश बाबू आपसे भी तगडे हैं सेठजी लेकिन वो शादी करके करेगे क्या ?

महादेव अचार डालेगा क्यो खाना है ?

मूलचन्द मुझे तो गैस बनती है सेठजी।

(पार्वती प्रवेश करके खडी होकर बाते सुनते हुए)

पार्वती ऐसी किस घर में भूख है जो गणेश को अपनी लडकी देगा ?

महादेव गणेश करोडपति बाप का बेटा है किसी कगाल का नहीं।

आजकल लोग पार्टी देखत हैं लडका कौन देखता है !

पार्वती लेकिन आपको करोडपति मानता कौन है ? सारा शहर जानता है तुम्हारे रईसपणे को और उस पागल को।

महादेव क्यो पागला की शादी नही होती ? वो कुआरे मरते हैं ?

पार्वती कुआरे तो नहीं मरते भाग फूटे को कर्म फूटा मिल ही जाता है। क्यो किसी गरीब की जिन्दगी खराब करते हो।

महादेव अरे ! लडकी गरीब नहीं है करोडपति बाप की इकलौती बेटी है। अच्छा मुझे यह बतला–क्या कमी है गणेश मे ?

पार्वती कमी गणेश मे नहीं है आप मे है।

महादेव तो तलाक दे दे मुझे।

पार्वती तलाक में क्यो दू। वो उपर वाला देगा।

महादेव जा जा अन्दर जा और घर की साफ सफाई कर।

पार्वती मैं तो जा रही हू, किसके दो सिर हैं जो तुमसे खपत करे।

महादेव और सुन मैं जरा चम्पालालजी के यहॉ होकर आ रहा हूँ।

पार्वती कौन मना कर रहा है ? कुछ देर तो घर मे शान्ति रहेगी।

(महादेव का प्रस्थान और मूलचन्द का प्रवेश)

मूलचन्द सेठजी कहा गए मालकिन ?

पार्वती भाड मे। क्यो तुम्हे भी जाना है ?

मूलचन्द मुझे कहॉ समय है मेरा तो अभी सारा काम बाकी पडा है।

(पार्वती का जाना और लगडाते हुए गणेश का प्रवेश)

अरे गणेशबाबू, आपके पैर के क्या हुआ ?

गणेश मन्दिर की भीड मे एक भैंस जैसी औरत ने मेरा पैर कुचल डाला। ननिहाल जाकर पट्टी बधवाकर आया हूँ।

मूलचन्द ननिहाल मे हॉस्पीटल खुला है ?

गणेश नहीं मेरे ननिहाल मे एक नर्स किराये पर रहती है। उसने मेरे पैर मे पट्टी बाधकर कहा आई लव यू

मूलच-द तुमने वापस क्या बोला गणेश बाबू ?

गणेश मैंने कहा सेम टू यू

(दोनो जोर से हसते है गणेश मूलचन्द की जेब मे हाथ डालते हुए)

ये तुम्हारी जेब मे क्या है मूलिया ?

मूलचन्द मेरे गाव से चिट्ठी आई है।

गणेश क्या लिखा है चिट्ठी मे ?

मूलचन्द एक बुरी खबर है गणेशबाबू, मेरा छोटा भाई मर गया।

गणेश छोटा भाई ! कितने साल का था तुम्हारा भाई ?

मूलचन्द पाच साल का था।

गणेश तुम्हारा बाप कब मरा मूलिया ?

मूलचन्द बाप को मरे तो दस वर्ष हो गए।

गणेश तुम कितने भाई हो मूलिया ?

मूलचन्द मुझ सहित चार थे तीन मर गए।

गणेश तीनो भाई बीमार थे ? क्या हुआ था उनको ?

मूलचन्द नहीं तीनो को पीलिया हो गया था।

गणेश जब ही मेरा बाप पीला पायजामा पहनता है।

मूलचन्द एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है दारू मेरा बाप पीता था लेकिन पीलिया मेरे भाइयो को कैसे हो गया ?

गणेश मैं बतलाऊ ?

मूलचन्द बताइए ना गणेशबाबू, मै बहुत दुखी हूँ।

गणेश ध्यान से सुन एक बुढिया के दो लडके थे। बुढिया का बडा लडका सुबह साय हनुमान मदिर मे बैठा जय जय राम जयश्री राम की धुन लगाए रहता और बुढिया का छोटा लडका रोजाना सुबह हनुमान मदिर जाता और हनुमानजी की मूर्ति को एक लट्ठ मारके आ जाता। ऐसा करते कई महीने बीत गए। एक दिन हनुमानजी बुढिया के सपने मे प्रकट होकर बोले--ऐ बुढिया अपने छोटे बेटे को समझा लेना वरना मैं तुम्हारे बडे बेटे का गला घोट डालूगा।

मूलचन्द — छोटा बेटा लाठी मारे और बडे बेटे का गला घोट डालूगा। यह कोई बात हुई।

गणेश — बडे–बडे शहरो मे ऐसा ही होता है। अब देख दारू तुम्हारा बाप पीता था और पीलिया तुम्हारे भाइया को हो गया।

मूलचन्द — कमाल है यार।

(दोनो हसते है और बाहर से महादेवप्रसाद का प्रवेश)

महादेव — अरे ! गणेश बेटा यहाँ आ और बात सुन।

गणेश — आज तुम्हारी आवाज मे इतनी मिठास कैसे है बाप ? चुन्नीलालजी की दुकान से कुल्हड वाला शर्बत पीकर आए हो ?

महादेव — नहीं बेटे आज तू थोडा ढग से रहना।

गणेश — क्यो ? आज कालिये साड फिर लडेगे ?

महादेव — नहीं आज बगलोर से एक पार्टी तुम्हे देखने आ रही है।

गणेश — क्यो मेरे सींग–पूछ लगे हैं ?

महादेव — नहीं वो पार्टी तुम्हे देख करके लाल रग की मारुती देगी।

(मूलचन्द गणेश के कान मे कुछ कहता है)

ये बेईमान क्या कह रहा है गणेश बेटे ?

गणेश — मूलिया बोल रहा है मेरे लिए लुगाई लाने की तैयारिया चल रही हैं।

महादेव — हॉ बेटे वो पार्टी तुमसे कोई पूछताछ करे तो तुम सिर्फ हा और ना मे ही जवाब देना समझ गया बेटे ?

गणेश — समझ गया बाप तुम आज इतने मीठे बोले तब ही मैं तो समझ गया था।

मूलचन्द — मै भी समझ गया हूँ सेठजी।

महादेव — समझ गया है तो गणेश को अन्दर ले जा और इसे अच्छी तरह समझा–बुझाकर तैयार कर। अगर यह काम बन गया तो मैं तुम्हे सोने की अगूठी और तेरी औरत के पैरो मे चादी की पाजेब डालूगा।

गणेश — और मेरे लिए क्या लाएगा बाप ?

(बिगडते हुए)

महादेव — तुम्हारे लिए लाऊगा भैंस बाधने की जजीर।

गणेश — ऐसी बात है तो फिर आने दो पार्टी को।

(बिगडते हुए)

महादेव — मूलिया देख क्या रहा है। इस कमबख्त को अन्दर ले जा और जल्दी से तैयार कर इस साड को।

मूलचन्द — अभी लो सेठजी आइये गणेशबाबू मैं तुम्हारे काजल डालता हूँ।

(दोनो का अन्दर जाना और पार्वती का प्रवेश)

महादेव — पार्वती वो बगलोर वाली पार्टी लाल रग की मारुती लेकर आ रही है।

(चिल्लाते स्वर मे)

पार्वती — आग लगे लाल रग की मारुती को। क्यो किसी की जिन्दगी खराब कर रहे हो ? मैं यह रिश्ता कभी नहीं होने दूगी।

महादेव — देख पार्वती अब तू बेकार की बाते मत कर।

पार्वती — उल्टे काम तुम कर रहे हो और कलेजा मेरा धक–धक कर रहा है।

महादेव — अरे ! जब मारुती मैं बैठोगी ना तो धक–धक सब बन्द हो जाएगी।

पार्वती — हे भगवान् इनका सास कैसे निकलेगा ?

महादेव — अरे बहुत आसानी से निकलेगा मारुती मे बैठकर ही ऊपर जाऊगा।

पार्वती — ऊपर तो भाग्यशाली जाते हैं। तुम तो सीधे नीचे जाओगे।

महादेव — ठीक है तुम अन्दर जाकर गणेश के कपडे बदलो। वो पार्टी आने ही वाली है।

(बाहर से आवाज)

लूणकरण — अरे भाई महादेवप्रसादजी घर में है क्या ?

महादेव — देख वे लोग आ भी गए। *(आवाज देते हुए)* अरे मूलिया।

मूलचन्द — हुकम सेठजी।

महादेव — देख बाहर कौन है।

(पार्वती अन्दर जाती है बाहर से चार आदमियो का प्रवेश)

महादेव — आइए-आइए डालीरामजी मैं आपका ही इन्तजार कर रहा था लेकिन पत्र मे तो आपने कल के आने का लिखा था ?

डालीराम — वो ऐसा हुआ महादेवप्रसादजी दिल्ली तक हवाई जहाज के टिकट हो गए इसलिए शाम को दिल्ली और आज यहाँ।

महादेव — सही बात है। आजकल दूरिया तो रही कहाँ हैं। सुबह का नाश्ता सिगापुर मैं और रात का खाना (अनूपचन्द बीच मे बोलता है) दिल्ली मे

डालीराम — इनसे मिलिए ये हैं मेरे सालाबाबू।

महादेव — बडी खुशी हुई आपसे मिलकर मेरा नाम महादेवप्रसाद लेवालकर।

अनूपचन्द — बहुत बढिया नाम है लेवालकर। आपके पिताजी ने सोच समझकर ही रखा होगा ?

(एक ड्राइवर बाहर से फ्रूट आदि के डिब्बे लाकर पास मे रखता है।)

महादेव — अरे ! यह आपने क्यो तकलीफ की डालीरामजी !

(बीच मे बोलता है।)

गुलाबचन्द — इसमे तकलीफ कैसी महादेवप्रसादजी बेटी के घर खाली हाथ थोडे ही आया जाता है।

(मूलचन्द पानी का जग लेकर प्रवेश करता है)

मूलचन्द — लीजिए सेठजी ठण्डा जल लीजिए।

महादेव — ये मेरा नोकर मूलचन्द सात पीढी से हमारे यहीं नौकरी कर रहा है।

डालीराम — सात पीढी से लेकिन इसकी इतनी उम्र लग तो नहीं रही।

महादेव तो इसमें मेरा क्या कसूर डालीरामजी ?

अनूपचन्द आप भी खूब हैं सेठजी मजा आ गया मिलकर।

(सब हसते हैं।)

महादेव मूलिया अन्दर जा और नाश्ता लेकर आ।

मूलचन्द नाश्ता लाने का मैंने आपको पूछा था लेकिन आपने

(बीच मे बोलता है)

डालीराम नाश्ते की कोई जरूरत नहीं है सेठजी हम होटल से नाश्ता पानी करके ही आये है। होटल वाले ने पैसे भी नहीं लिए कि आप हमारे मेहमान है पेमेण्ट महादेवप्रसादजी अपने आप कर देगे।

(मूलचन्द हसकर अन्दर जाते जाते)

मूलचन्द बेवकूफ है घर आई लक्ष्मी को ठुकराता है।

डालीराम अरे हा आपके बाल बच्चे कितने हैं सेठजी मैं तो पूछना ही भूल गया ?

महादेव बच्चो के मजे तो मिया भाई लेते हैं सेठजी मेरे तो आगे पीछे एक ही लडका है गणेश।

अनूपचन्द अच्छा नाम है गणेश। जैसे गणेश छाप बीडी।

महादेव अरे हॉ आपने अपनी लडकी का नाम क्या बताया ?

डालीराम वो अपनी मा पर गई है सेठजी इसलिए उसका नाम मैंने काजल रखा है लेकिन हम घर मे उसे कानकी कहते हैं।

महादेव कानकी यह कोई नाम हुआ ?

अनूपचन्द वो ऐसा हुआ सेठजी बचपन मे उसे शीतला माता निकल गई थी और एक ऑख शीतला माता को भेट चढ गई।

महादेव एक आख शीतला माता को भेट चढ गई तो इसमे आपका कोई कसूर है या मेरा ? वैसे देखने मे तो सुन्दर है ना ?

गुलाबचन्द देखने मे तो सुन्दर है लेकिन एक बार कानकी रसोईघर मे काम कर रही थी तो ऊपर से डिब्बा गिर गया और थोडी नाक पिचक गई।

महादेव अब नाक पिचक गई तो अपने को फैशन शो में थोडे ही भेजना है वैसे बाईसा पढी हुई तो होगी ?

डालीराम एक बार स्कूल भेजी थी और उसी दिन वो एक लडके के साथ भाग गई इसलिए हमने स्कूल छुडा दी।

महादेव अच्छा किया आपने ? आजकल ये टी वी और फिल्मे देश के भविष्य को मटियामेट कर रहे हैं इसलिए मेरी एक प्रार्थना है सेठजी आप दहेज मे सब कुछ दे देना लेकिन टी वी मत देना।

(बीच मे बोलता है)

अनूपचन्द कितने नेक विचार हैं आपके। आपको तो

(मूलचन्द का पानी के साथ प्रवेश)

मूलचन्द लीजिए ठडा जल पीजिए सेठ साहब।

(मूलचन्द गिलासे भरता है सब लोग पानी पीते हैं।)

अनूपचद अब कुछ लेन देन की बात हो जाय सेठा ! क्योकि हमें आज साय की ट्रेन से वापस भी जाना है।

गुलाबचन्द हा हा बोलिए महादेवप्रसाजी आप शर्मा क्यो रहे हैं ?

महादेव अब मैं क्या बोलू, आजकल की पोजिशन तो आप जानते ही हैं। रिति रिवाज कितने बढ गए हैं।

अनूपचन्द फिर भी बात साफ हो जाय तो अच्छा है सेठसाहब।

डालीराम हॉ हॉ हुकम कीजिए न महादेवप्रसादजी आप सकोच क्यो कर रहे हैं ?

महादेव देखिए सेठजी मेरे एक ही लडका है इसलिए आपको एक किलो सोना और सवा लाख का टीका तो करना ही होगा और मारुती आप साथ लाए ही हैं। वैसे अपनी कोई माग नहीं है।

अनूपचन्द वो ऐसा है सेठजी एकाएक हवाई जहाज से आना हो गया इसलिए मारुती तो हम साथ केसे लाते ?

महादेव कोई बात नहीं मारुती यहॉ से खरीद लेगे। यहॉ अच्छा शोरुम है मारुती और इन्डिका का।

गुलाबचन्द आपकी सब मागे हमे मन्जूर हैं सेठजी। कृपया कवर साहब को बुलाइए। आए हैं तो यह नेग भी पूरा कर जाए।

महादेव अरे सेठजी । लडके का क्या देखना। मेरा घर देखो। मेरा धन्धा देखिए। लडके का क्या गोरा या काला आदमी मे बस गुण हाना चाहिए। मैंने भी आपकी बच्ची को कब देखा है। जैसा आपने बतलाया मैं मान गया।

हल्दीराम देखिए महादेवप्रसादजी लडके को देखे बिना तो हम सवा लाख का तिलक नहीं कर सकते। चलिए उठिए अनूपचन्दजी। यह रिश्ता हमे मजूर नहीं।

(मूलचन्द पानी लेकर प्रवेश करता है)

मूलचन्द अरे वाह ऐसे कैसे उठ सकते हैं सेठजी। पहले आप ठण्डा–ठण्डा पानी पीजिए गणेशबाबू तैयार हो रहे हैं।

महादेव हा हा आप बैठिए मैं लडके को लेकर आ रहा हूँ।

(महादेवप्रसाद का अन्दर जाना)

अनूपचन्द अरे मूलचन्दजी बार बार इतना ठण्डा पानी कहाँ से ला रहे हैं आप ? टकी साफ कर रहे है या आपका मटका फूट गया ?

(बीच मे)

गुलाबचन्द पानी पिला पिलाकर पेट को ढोल कर दिया।

मूलचन्द ऐसी बात नहीं है सेठजी आपके आने का सुना तो मैंने दस मटके ओर भर लिए। आप जल लीजिए मैं गणेशबाबू को लेकर आता हूँ।

(मूलचन्द अन्दर जाता है डालीराम वगैरह आपस मे कानाफूसी करते हैं और मूलचन्द गणेश को लेकर कमरे मे आता हैं।)

मूलचन्द देखो गणेशबाबू, ये आपके ससुरजी हैं।

गणेश ससुरजी । लेकिन मेरी शादी कब हुई ?

मूलचन्द शादी तो अब हो जायेगी।

गणेश होगी तब की बात है राजस्थानी मे कहावत है 'भूखो धाया पतीजै।

मूलचन्द अच्छी बात है ससुरजी को मुजरा करो।

गणेश मुजरा वेश्याए करती हैं।

मूलचन्द मेरा मतलब हे ससुरजी के आगे माथा टेको।

गणश माथा गुरुद्वारे मे टेकते ह।

मूलचन्द ससुरजी के धोक लगावो।

गणेश धोक भेरोनाथ बावा के लगती हे और फेरी रामदेवजी महाराज के समझ गया या दुबारा समझाऊ ?

अनूपचन्द लडका बडा समझदार लगता है जीजोसा ?

मूलचन्द लाखो मे एक हे सेठजी।

डालीराम क्या नाम है वेटे तुम्हारा ?

गणेश पहले आप अपना नाम बताइए।

डालीराम मेरा नाम डालीराम लूणिया।

गणेश लूणिया जब भी मेरा पेट दुखता है तो मेरी मा मुझे लूणिया नींबू खिलाती है *(इशारा करते हुए)* आपके साथ ये चडाल चौकडी कौन है लूणियाजी ?

डालीराम ये मेरे साला बाबू अनूपचन्दजी साड।

गणेश साड तो बधा हुआ ही अच्छा रहता है। इनको खुला क्यो छोड रखा है आपने ?

डालीराम मै इनका साला और ये मेरे साले।

गणेश साले ही साले तो मेरे साले को साथ नहीं लाए आप ?

गुलावचन्द वो शादी के बाद तुमसे मिलेगा पहले नहीं।

गणेश लेकिन शादी होगी तब ना महीने मे दस जने मुझे देखने आते हैं। अभी तक तो एक भी साला

(बीच मे बोलता है)

गुलावचन्द कवरसाहब पढना लिखना कुछ आता है आपको ?

गणेश देखिए मैं आपसे झूठ नहीं वोलूगा पढना लिखना तो नहीं आता लेकिन मुझे गरुडपुराण जुबानी याद है सुनाऊ ?

डालीराम अभी नहीं वापस आएगे तव सुनेगे।

गणेश वापस तो मेरे दादाजी आए तो

(बीच मे बोलता है)

अनूपचन्द गणेशमलजी और कुछ काम वगैरह जानते हैं आप ?

गणश मुझे खडी साइकिल की हवा निकालनी आती है।

डालीराम और कुछ ?

गणेश मुझे पतग उडानी आती है *(इशारा करके)* मूलिया चरखी पकड।

(मूलचन्द चरखी पकडने का एक्शन करता है और गणेश पतग उडाने का।)

गुलाबचन्द और क्या आता है आपको ?

गणेश मुझे भजन आता है सुनाऊ ?

अनूपचन्द हा हा उसकी मन मे क्यो रखते हो सुनाओ।

(गणेश बुरी तहर चिल्लाते स्वर मे भजन गाता है मूलचन्द ढोलक बजाने का एक्शन करता है।)

गणेश मैया मेरी मैं नहीं माखन खायो ग्वाल बाल जबरदस्ती गालो पर लगाया।

(ताली बजाकर)

अनूपचन्द वाह मजा आ गया वाह कवर साहब।

(बीच मे)

गुलाबचन्द भजन सुनकर मेरे तो रोगटे खडे हो गए।

गणेश तुम रोंगटे की बात कर रहे हो मैंने एक रोज रामसुखदासजी महाराज की कथा मे यह भजन सुनाया था भजन सुनते ही वहा बैठे सब लोग खडे हो गए।

डालीराम एक बात बताइए कवर साहब आप इतनी देर अन्दर क्या कर रहे थे ?

गणेश मैं तो बाहर आने के लिए कब का 'बायड मर रहा था लेकिन इस मूलिये ने मुझे अन्दर बन्द कर रखा था।

डालीराम और कुछ आता है तो सुनाइए कवर साहब।

गणेश देखिए अब मुझे जाने दीजिए वरना

अनूपचन्द अच्छा आप जाओ और आपके पिताजी को बाहर भेजो। *(आवाज लगाता है)*

गणेश बाप आ बाप बाप रे।

(महादेव कमरे मे आता है और गणेश ओर मूलचन्द अन्दर जाते है।)

महादेव क्यो सेठजी लडका पसद आया ?

डालीराम आपको शर्म नहीं आती। आप इस पागल औलाद के लिए सवा लाख का तिलक और एक किलो सोना माग रहे हैं। आपने अगले जन्म मे बुरे कर्म किए जिसके कारण आपको ऐसी औलाद हुई ओर अब आप अगला जन्म और बिगाड रहे है। मैने कहा लडकी कानी है। आपने कहा क्या फर्क पडता है। मेने कहा लडकी की नाक पिची हुई है। आपने कहा अपने को फैशन शो मे थोडे ही भेजना है। मैंने कहा लडकी एक बार घर से भाग गई थी । गुस्सा तो इतना आ रहा है कि अभी आपको पुलिस के हवाले करे लेकिन हमने आपकी आवाज टेप कर ली है सबूत के लिए वो काफी है।

(गणेश प्रवेश करके।)

गणेश मेरा भजन टेप कर लिया ससुरजी ?

डालीराम भजन भी टेप कर लिया और इनकी आवाज भी चलिए अनूपचन्दजी अच्छा हुआ हमने एक दिन पहले यहा आकर इनकी सारी तारीफ सुनली वरना लडकी की जिन्दगी खराब हो जाती ।

गणेश ससुरजी आप बारात लेकर कब आ रहे हैं ? *(सब लोग जाते–जाते)*

डालीराम बारात नहीं हम पुलिस को लेकर आ रहे हैं।

महादेव हरामखोर कितना समझाया था कि अपना मुँह वद रखना और सिर्फ हॉ और ना मे जवाब देना।

(पार्वती और मूलचन्द प्रवेश करके।)

पार्वती क्यो मार रहे हो मेरे छोर को ?

महादेव हरामखोर ने हाथ आई लक्ष्मी और लाल रग की मारुती को ठोकर मार दी।

पार्वती अगर इतनी ही मारुती की भूख है तो पैसे खर्च करके लाते क्यो नहीं ? बाप दुनियाभर का पैसा छोडकर मरा है।

महादेव मूलिया तू यहा खडा खडा क्या मजा देख रहा है देख इन पेटियो मे क्या है ?

(मूलचन्द फ्रूट की पेटिया सम्भालता है। पेटियो मे घास-फूस निकलता है। उसी दौरान दरवाजा खटखटाने की आवाज)

पार्वती जा देख बेटा कौन है बाहर ?

गणेश कोई बाप का पूछे तो क्या बोलू मा।

(बीच मे बोलते हुए)

महादेव बोल देना महादेवप्रसाद मर गया।

गणेश मॉ तेरा कोई पूछे तो क्या बोलू ?

पार्वती बोल देना वो अपने खसम के साथ सती हो गई।

गणेश कोई मेरा पूछे तो क्या बोलना है बाप ?

(बिगडते हुए)

महादेव बोल देना बाप की अरथी के खन्धा लगाने गया है।

(गणेश बाहर जाकर वापस आता है)

महादेव बाप तार आया है।

महादेव बैंत के लपेट दे फटेगी नहीं।

(पार्वती लिफाफा खोलकर पढती है)

किसकी चार्जशीट है ?

पार्वती चार्जशीट नहीं है ममता बेटी की मार्कशीट है।

(दरवाजे पर दस्तक)

महादेव देख तो फिर कौन मरा है ? मूलिया !

मूलचन्द मैं तो जिन्दा हूँ सेठजी मर आपके दुश्मन।

महादेव बाहर जाकर देख कौन है ?

(मूलचन्द बाहर जाता है। साथ मे पुलिस इन्सपेक्टर का प्रवेश)

महादेव इन्सपेक्टर साहब आप ?

इन्सपेक्टर आपमे महादेवप्रसाद कौन है ?

महादेव म हू महादेवप्रसाद आप मुझे नहीं जानते इन्सपेक्टर साहब ? आप तो कई बार मुझसे चन्दा लेकर

(बिगडते हुए)

इन्सपेक्टर बकवास बन्द कीजिए मुझे अभी–अभी सूचना मिली है कि आपने अपने लडके के दहेज मे सवा लाख नगद और एक किलो सोने की माग की है।

महादव गलत सुना है आपने ? मैं तो दहेज लेने–देने के बिल्कुल खिलाफ हूँ। यह खडी पार्वती मेरी धर्मपत्नी पूछो इससे इसके बाप ने मुझे एक फूटी कोडी तक नहीं दी थी।

पार्वती मुँह तो बहुत फाडा था इन्सपेक्टर साहब पर मेरे पिताजी ने भी आज की तरह पुलिस को बुला लिया था।

(बीच मे बोलते हुए)

महादेव अरे ! चुप कर बेशर्म इन्सपेक्टर साहब के सामने जबान चलाती है। वो पुलिस वाले मेरी बारात के साथ थे।

इन्सपेक्टर तो आपने दहेज की कोई बात नहीं की ?

महादेव नहीं साहब। कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।

इन्सपेक्टर तो ध्यान से सुनिए यह किसकी आवाज है ?

(इन्सपेक्टर टेप ऑन करता है डालीराम और महादेव का पूरा वार्तालाप सुनाई देता है। अन्त मे गणेश का गाया भजन बजता है मैया मैं नहीं माखन गणेश झूमता है)

धीरे धीरे मच पर पूर्ण अन्धकार

वीरचक्र

वीरचक्र

प्रथम दृश्य

(स्व मेजर कैलाशदानजी का बगला और एक सजा हुआ कमरा। कमरे की दीवार पर स्व मेजर कैलाशदान का चित्र टगा है। कमरा खाली पडा है और फोन की घण्टी लगातार बज रही है बाहर से कुलवीर का प्रवेश व फोन उठाना।)

कुलवीर हेलो ! कौन साहब ? जी मैं राहुल का दोस्त कुलवीर बोल रहा हूँ। जी ऐसा लग रहा है अभी तो घर मे कोई नहीं है मैं बोल दूगा सर।

(दीनानाथ प्रवेश करके)

दीनानाथ किसका फोन था कुलवीर बाबू ?

कुलवीर इतनी देर से फोन बज रहा था आप कहॉ थे चाचा ?

दीनानाथ रामदीन आवाज लगा रहा था मैं जरा कपडे देने चला गया।

कुलवीर राहुल कहॉ है ? मुझे जरूरी काम था।

दीनानाथ फार्म पधारे थे। बस आने वाले ही हैं। आप बैठिए न खडे क्यो हैं ?

कुलवीर राहुल के आने पर बोल देना कि इस नम्बर पर शर्माजी से बात करले।

(कागज हाथ मे थमाते हुए)

दीनानाथ लेकिन आप जा कहॉ रहे हैं बैठिये ना। मैं आपके लिए चाय बनाकर लाता हूँ।

कुलवीर आपको पता ही है चाचा मैं गरम नहीं ठण्डी चाय पीने का

आदी हूँ।

दीनानाथ तो क्या अभी तक कोई नौकरी का जुगाड नहीं हुआ ?

कुलवीर नौकरी और इस देश मे रोज जहर पीता हूँ चाचा फिर भी मौत नहीं आ रही हे।

दीनानाथ नहीं नहीं ऐसी अशुभ बात मुँह से नहीं निकाला करते बेटे। ऊपर वाले ने चोच दी है तो चुग्गा भी देगा।

कुलवीर *अब तो कुछ और ही करने की सोच रहा हूँ और उम्मीद करता हूँ कि अब भूखा तो नहीं मरुगा।*

दीनानाथ नहीं नहीं बेटे ये धन्धे अच्छे नहीं हैं। छोटे सरकार बतला रहे थे कि गगा अच्छा आदमी नहीं है।

कुलवीर आज के युग मे बुरा तो वो आदमी कहलाया जाता है दीनानाथ चाचा जो मेरी तरह गरीब है निकम्मा है मजबूर है। भला और इज्जतदार वो है जिसके पास ढेर सारा धन है पैसा हे।

दीनानाथ पेसा सिर्फ इसान की दिमागी भूख है बेटे जो कभी मिटती नहीं। भला इसान वो है जिसकी घर मे समाज मे पैठ हो इज्जत हो।

कुलवीर लेकिन मेरे पास इन मे से एक भी चीज नहीं है चाचा।

दीनानाथ क्यो नहीं है। सब कुछ तो है बेटे पढे लिखे हो समझदार हो जरा हिम्मत से काम लो सब ठीक हो जाएगा। वो शेर नहीं सुना तुमने–

गम की अधेरी रात मे दिल को न बेकरार कर।

सुबह जरूर आयेगी सुबह का इतजार कर।

कुलवीर तसल्ली के लिए ये अच्छा शेर है चाचा।

दीनानाथ यह सिर्फ तसल्ली नहीं है बेटे हर साझ के बाद सवेरा निश्चित है और आने वाला सवेरा एक नई रोशनी लेकर आता है।

(राहुल का प्रवेश)

कुलवीर आओ राहुल ! चाचा से पूछो कितनी देर से इतजार कर

रहा हू तुम्हारा।

राहुल अच्छा होता आप इतजार न करके यहा से दफा हो जाते।

(दीनानाथ अन्दर जाता है)

कुलवीर राहुल लगता है पैसे का नशा अब तुम पर भी चढने लग गया है। अगर कुछ कहने की इच्छा है तो साफ–साफ क्यो नहीं कहता।

राहुल बस इतना ही कि तुम अपनी आदतो से बाज नहीं आओगे ?

कुलवीर ऐसा मैंने कौनसा जुल्म कर दिया जो तुम आपे से बाहर हुए जा रहो हो।

राहुल कुछ कर डालता तो अच्छा था दोस्त लेकिन ये तेरा नहीं करना ही बुरा है।

कुलवीर पहेलियो का सहारा क्यो ले रहे हो ? जो कुछ कहना है खुलकर सामने क्यो नहीं आते ?

राहुल लाख समझाने के बावजूद तुम शराब मे धुत रहते हो और मैंने सुना है कि तुम गगा के साथ मिलकर शराब व अफीम का काला धन्धा कर

(बीच मे बोलता है)

कुलवीर मैं शराबखोर हू, शराब पीता हू, लेकिन ये झूठा इल्जाम मुझ पर क्यों लगाया जा रहा है ? क्या सबूत है किसी के पास ?

राहुल मेरे पास फिजूल का वक्त नहीं है जो तुमसे मैं बहस करू। न तो मैं पुलिस इन्सपेक्टर हू और ना यह अदालत का कटघरा जहा तुम अपने बचाव का सबूत पेश कर रहे हो। एक दोस्त होने के नाते सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू, ये धधे छोड दो वरना पछताओगे और यह रही सही इज्जत भी मिट्टी मे मिल जायेगी।

कुलवीर पहले से ही मेरे पास क्या बाकी रह गया है जो चला जाएगा। दर दर की ठोकरे खा रहा हू। लानत है ऐसे जीने से तो मौत अच्छी।

राहुल अपनी बुराइयो को छुपाने के लिए मौत का सहारा लेते हो ? आखिर ऐसी तुम्हे तकलीफ क्या है घर बार बहन

भाई सब कुछ तो हैं तुम्हारे।

कुलवीर बेकारी मे वो सब मुझे काटने को दौडते हैं। क्या यही अरमान लेकर मेरे पिताजी ने अपना पेट काटकर मुझे तालीम दिलवाई थी ?

राहुल वो सब ठीक है नौकरी आज नहीं तो कल मिल जाएगी। इनसान को धीरज भी रखना चाहिये।

(झुझलाकर)

कुलवीर धीरज धीरज धीरज। धीरज रखने की भी एक सीमा होती है। नौकरी जरूर मिल जाएगी। उस वक्त जब बूढे पिताजी फेक्ट्री मे काम करते करते दम तोड देगे या जवान बहन और मासूम भाई दाने दाने के लिये मोहताज होकर

(बीच मे ही)

राहुल वो नौबत तो न जाने कब आएगी लेकिन आज तुम जिस रास्ते पर चल रहे हो उससे सारा घर परशान है। उन्हे रोजी रोटी की नहीं तुम्हारी फिक्र है।

(तेज स्वर मे)

कुलवीर क्या लेता हू मैं उनका ? मैं घर जाता ही नहीं।

राहुल सच कहते हो। तुम्हे घर जाने की फुरसत ही कहा मिलती है मेरे दोस्त। तुम घर जाने की जरूरत तब महसूस करते हो जब तुम्हारे पास पीने को पैसे नहीं होते।

कुलवीर ये सरासर झूठ है मेरे खिलाफ इल्जाम है। मे भी उनकी खिदमत करना चाहता हू, उनको हसता देखना चाहता हू लेकिन मेरी अपनी मजबूरिया हैं।

राहुल क्या कहा मजबूरिया ! अपने गिरेबान मे झाककर देखो क्या छोडा है तुमने घर पर ? बूढे पिताजी सीमा और छोटे मुन्ने के अलावा क्या बाकी रह गया है घर मे ?

कुलवीर ये लम्बे उपदेश लबी तकरीरे भरपेट खाने वालो की बाते हैं दोस्त ! मेरा इनसे कोई सरोकार नहीं रहा। तुम शायद कॉलेज यूनियन के प्रेजीडेण्ट कुलवीर को भूल गये हो।

राहुल वो कुलवीर मुझे अच्छी तरह याद है जो कहता था अगर *कभी मिनिस्टर बन गया* तो हिन्दुस्तान से शराब का नामो निशान मिटा दूगा क्योकि गरीबो की तबाही म इसका बहुत बडा हाथ हे और आज वो ही कुलवीर चोबीसा घण्ट इन्हीं शराब की प्यालिया मे डूबा रहता हे। क्या उसी कुलवीर की बात कर रहे हो ना ?

कुलवीर आज मैं इन्हीं प्यालियो के सहारे जिन्दा हू, राहुल। नौकरी की तलाश मे मैं कहा कहा नहीं भटका। वो कौनसा ऑफिस है जिसका दरवाजा मैंने नहीं खटखटाया। मगर जानते हो मुझे क्या मिला ? सिर्फ एक ही रटा रटाया जवाब--नो वेकेन्सी।

राहुल लेकिन इसका ये मतलब तो नहीं कि नोकरी न मिलने पर इसान अपनी जिन्दगी से खेलने लगे और अपने साथ--साथ अपने घरवालो को भी डुबा दे ।

कुलवीर कौन किसको लेकर डूबता है दोस्त ! शराब मेरी जिदगी है। मेरे जख्मो को भरने की एक दवा। इसे पीकर मैं अपने गमो से निजात पा जाता हू और तुम कहते हो कि इस एकमात्र साथी को भी छोड दू ?

राहुल शराब किसी का दोस्त नहीं है कुलवीर। यह तुम्हारी गलतफहमी है। जिसे पीकर इसान इसानियत से कोसो दूर चला जाता है। ससार मे जितने भी भयकर अपराध होते हैं उनके पीछे ज्यादातर इसी का हाथ होता है और इसी नशे की आड मे इसान नीच से नीच काम करने पर उतारू हो जाता है।

कुलवीर मैं जानता हू, लेकिन मैं शराब शौकिया नहीं बल्कि गम गलत करने को पीता हू। अपने आप को भूल जाने का पीता हूँ।

(बीच मे)

राहुल सब जानते हो तो क्यो तबाही के रास्ते पर भटक रहे हो ? अब भी कुछ नहीं बिगडा है अब भी लौट आओ। याद है तुम्हे जब कालीचरण अपनी बीवी के जेवर बेचकर शराब

पी गया था और तुमने उसे पीट पीट कर अधमरा कर डाला था ? वो जग्गू चाचा भी याद होगा तुम्हें जो शराब के नशे मे सब कुछ भूल जाता था। जिसकी बीवी और मासूम बच्चे रोटी के एक टुकड़े के इंतजार मे सारी सारी रात भूख से गुजार देते थे। भूखा पेट उनकी अंतड़ियाँ नोचता था उसके मासूम बच्चे रातभर यही कहते सुने गये मा हम प्यासे नहीं भूख लगी है रोटी चाहिये। (तेज स्वर मे) याद है वो मगलसिंह जिसने इसी नशे की आड मे अपने मासूम बच्चे को भूख से तडपा तडपा कर मार डाला ?

(झुझलाते हुए)

कुलवीर मुझे सब याद है मैं भूला नहीं हू। मैं अपने आप से भटक गया हू। मुझे कोई रास्ता नजर नहीं आता। मैं कहा जाऊ किधर जाऊ ? मैं मर जाना चाहता हू। मुझे मौत क्यो नहीं आती मुझे मौत क्या नहीं आती ?

(कुलवीर दीवार पर हाथ मारता है राहुल उसे पकडते हुए।)

राहुल क्या कर रहे हो पागल हो गए हो तुम ?

कुलवीर छोड दो मुझे। मैं मर जाना चाहता हू।

(कुलवीर को पकडते हुए)

राहुल बकवास बन्द कर। कितनी बार कह चुका हू कि इसान को हौसला रखना चाहिये। तुम्हारी तरह एक नहीं सैकडो इसान नौकरी के बिना भी जैसे तैसे अपना गुजर कर रहे हैं।

कुलवीर लेकिन मैं अब और दिन नहीं गुजार सकता। मैं घरवालों के लिये ही नहीं अपने आप के लिये भी बोझ बन गया हूँ।

राहुल समय आने पर सब ठीक हो जायेगा। लेकिन कसम खाओ कि आज के बाद तुम शराब को हाथ नहीं लगाओगे।

(कुलवीर रोने लगता है।)

कसम खाओ आइन्दा तुम शराब नहीं पीओगे। बोलते क्यो नहीं ? वादा करो कि भविष्य मे तुम शराब को छुओगे तक

नहीं।

(रमेश के दोनो हाथो को अपने हाथो मे बाधकर)

कुलवीर मैं हजार कोशिश कर चुका हू दोस्त लेकिन मैं हर बार हार जाता हू। मेरे पूरे शरीर मे यह जहर घुल चुका है। इसके बिना मैं एक पल नहीं रह

(उसी दौरान फान बजता है।)

राहुल हैलो ! राहुल बोल रहा हू कौन शर्माजी ? मुझे आपका मेसेज मिल गया था। बस मैं पाच मिनट मे आपके पास पहुँच रहा हूँ। नहीं नहीं बस मैं निकल ही रहा हूँ।

(फोन रखते हुए)

देखो कुलवीर तुम जरा यहीं ठहरना मैं एक जरूरी काम से इनकम टैक्स ऑफिस तक जाकर आ रहा हूँ। जाना नहीं मुझे तुमसे जरूरी बात करनी है।

(राहुल का तेज रफ्तार से बाहर की ओर प्रस्थान। कुलवीर सर पर हाथ रखकर बैठ जाता है और सेन्ट्रल टेबल पर रखा वैडिग कार्ड देखता है तभी दीनानाथ चाय लेकर आता है।)

दीनानाथ छोटे सरकार कहॉ चले गए कुलवीर बाबू ?

कुलवीर किसी काम से इनकमटैक्स ऑफिस तक जाकर आ रहा है।

दीनानाथ कोई बात नहीं आप चाय पीजिए। मैं धोबी को कपडे देकर आता हूँ।

कुलवीर हा हा जाओ चाचा।

(दीनानाथ जाने लगता है कुलवीर चाय पीते पीते सेन्ट्रल टेबल पर रखा वैडिग कार्ड पढता है और एकाएक उठते हुए)

कुलवर नहीं नहीं यह नहीं हो सकता।

(दीनानाथ रुककर)

दीनानाथ क्या बात है बेटा ?

कुलवीर यह सब झूठ है सीमा ऐसा नहीं कर सकती।

दीनानाथ आखिर बात क्या है बेटे अकेले मे किससे बात कर रहे हो ?

कुलवीर सीमा ने विवाह कर लिया उसने भी अपनी जात बता दी। चाचा मेरी बेकारी यहा भी आड आ गई।

दीनानाथ सुना है बेटे यह सब सीमा बेटी की मर्जी के खिलाफ हुआ है।

कुलवीर नहीं चाचा दुनिया मे अब सब कुछ पैसा रह गया है। वो नमकहराम बिक गई। क्योंकि मेरे पास वो नहीं है जो अरविन्द के पास है।

दीनानाथ नहीं नहीं बटे सीमा बटी तुमको धोखा नहीं दे सकती। जैसा मैने सुना है। सीमा बेटी को धोखे से पहले गाव भेज दिया गया और

(बीच मे बोलते हुए।)

कुलवीर उस बेवफा की वकालत मत करो चाचा गलती मेरी अपनी है। मैं उस धोखेबाज को पहचान नहीं सका।

दीनानाथ ऐसा नहीं है बेटे सीमा बेटी ने मुझे कई बार बोला था कि कुलवीर को कोई भी छोटा मोटा काम कर लेना चाहिए वरना मेरे पिताजी मुझे जबरदस्ती उस शैतान के पल्ले बाध देगे। आखिर वो ही हुआ बेटे जिस बात का डर था। अब तुम चाहे दोष किसी को भी दो।

(कुलवीर रोने लगता है)

दिल छोटा नहीं करते अपने आप को सम्भालो मैं तुम्हारे लिए पानी लाता हूँ।

(दीनानाथ अन्दर जाता है कुलवीर कार्ड को हाथ मे लेकर)

कुलवीर ये तुमने क्या किया सीमा ! क्या आज तक तुम भी मुझे धोखा देती रही ? कहा गए तुम्हारे वो वादे जो तुम रोज मेरे गले मे बाहे डालकर किया करती थी ? कुलवीर मैं तुम्हारे बिना एक पल भी जिन्दा नहीं रह पाऊगी। कहा गए वो आसू, जो तुम यह सोचकर बहा दिया करती थी कि कभी हम जुदा न होने पाए ? क्या वो सब दिखावा था

ढोंग था ? कुछ तो शर्म करती बेवफा।

(श्रीति प्रवेश करके)

श्रीति — बेवफा वो नहीं बेवफा तुम हो कुलवीर भैया जो मझधार मे एक मासूम को छोडकर चल दिये।

कुलवीर — जले पर नमक छिडकने आई हो ?

श्रीति — इसमे झूठ क्या है कुलवीर भैया ? उस गरीब ने तुम्हारा कितना इतजार किया था।

कुलवीर — बकवास मत करो मैं उस हराम के बारे मे कुछ भी सुनना नहीं चाहता। चली जाओ यहा से सच पूछो तो मुझे औरत जात से नफरत सी हो गई है।

(तेज स्वर मे)

श्रीति — किस औरत से नफरत है तुम्हे ? उस औरत से जिसने तुमको जन्म दिया ?

(चिल्लाकर)

कुलवीर — श्रीति ।

श्रीति — किस औरत से नफरत है तुम्हे ? उस औरत से जो किसी को कराहते नहीं देख सकती ?

कुलवीर — श्रीति

श्रीति — किस औरत से नफरत है तुम्हे ? उस औरत से जिसने तुम पर अपना सब कुछ लुटा दिया और उफ तक नहीं की ?

कुलवीर — मैं उसकी सफाई मे कुछ भी सुनना नहीं चाहता। यह क्यो नहीं कहती उसने क्या नहीं किया ? प्यार के झूठे बहाने बनाकर मेरा सुख चैन सब कुछ लूट लिया उसने।

श्रीति — शायद तुम सीमा की बात कर रहो हो कुलवीर भैया। उस सीमा की जिसने तुमको खुदा समझा। तुम्हारे लिए दुआए की। लेकिन तुमने उसे क्या दिया ? सिर्फ आसू, तडप। खैर खुदा का किया इन्साफ होगा। लेकिन तुम्हारी बेरुखी के कारण उसकी मोहब्बत का गला घोट दिया गया। उसकी जिन्दगी लूट ली गई। मगर दोष किसको दिया

जाय ? दोष सीमा का नहीं उसकी किस्मत का था कि मिलावट के इस बेरहम जमाने के जहर ने भी उस गरीब का साथ नहीं दिया वरना शादी से पहले ही वो

(रोती हुई आवाज)

कुलवीर क्या कहा सीमा ने जहर खा लिया। क्यो किसलिये और मुझ इस बात की खबर तक नहीं ये सब कुछ मुझे पहले क्यो नहीं बतलाया गया ?

श्रीति किसे बतलाना था उस कुलवीर को जो अपनी जिन्दगी से खेल रहा है ?

कुलवीर *श्रीति ।*

श्रीति किसे बतलाना था उस कुलवीर को जिसका कोई जमीर नहीं ? जिसका खुदा शराब है और कोई नहीं ?

(चीखते हुए)

कुलवीर बस बहुत हो गया श्रीति। मेरे जख्मो को और न कुरेदो। खुदारा खामोश हा जाओ।

श्रीति क्यो खामोश रहू। सीमा का दर्द मेरा दर्द है। वो हर लडकी का दर्द है। सीमा मेरी सहेली थी मेरी छोटी बहन थी। क्या कोई भला बाप यह चाहेगा कि वो अपनी लाडली लडकी की जिन्दगी एक शराबी के हवाले करदे ?

(बात को काटते हुए)

कुलवीर श्रीति।

श्रीति *एक मासूम का गला अपने हाथो घोट दे ? एक गिरे हुए इनसान के साथ*

(बीच में चिल्लाकर)

कुलवीर हा हा मैं गिरा हुआ इनसान हू। मैं शराबी हू। शराब पीता हू। मैं शराब पीऊगा और पीऊगा। मुझे कोई नहीं रोक सकता।

(जेब से शराब का पौवा निकालकर पीने लगता है।)

धीरे धीरे पूर्ण अन्धकार

दूसरा दृश्य

(स्व मेजर कैलाशदानजी का बगला टेलीफोन बज रहा है दीनानाथ प्रवेश करके)

दीनानाथ हेलो कौन मालकिन साहिबा ! जी क्या फरमाया आपने ? बधाई हो मालकिन। जी मैं बोल दूगा हुकम।

(दीनानाथ गुनगुनाते हुए सफाई करने मे लग जाता है और बाहर से श्रीति का प्रवेश)

श्रीति क्या बात है चाचा आज तो बहुत खुश नजर आ रहे हो क्या हाथ लग गया सुबह सुबह ?

दीनानाथ अभी-अभी मालकिन साहिबा का फोन आया था। वो आप लोगो की शादी की बात पक्की करके डेढ बजे की ट्रेन से वापस आ रही हैं।

श्रीति तो यह राज है आपकी खुशी का ?

दीनानाथ खुशी क्यो नहीं होगी बेटी कितना अच्छा होगा जब तुम इस घर मे बहू बनकर आ जाओगी।

जबसे मेजर साहब का स्वर्गवास हुआ है ये घर सूना सूना लग रहा है। मालकिन भी जब कभी पिछली बातो को याद करती हैं तो बहुत उदास हो जाती हैं। मुझसे तो उनकी वो दशा देखी नहीं जाती। लेकिन तुम बहू बनकर इस घर मे आ जाओगी तो सारा घर मारे खुशी के खिल उठेगा और कुछ समय बाद पूरा घर

(बात काटते हुए)

श्रीति अरे अरे क्या पागल हो गए हो चाचा ?

(राहुल का बाहर से प्रवेश)

राहुल अरे श्रीति ! कब आई तुम ? चाचा जल्दी से चाय

पिलाओ। थककर चूर हो गया हूँ।

दीनानाथ अभी लाया छोटे सरकार।

(दीनानाथ अन्दर जाता है)

राहुल श्रीती तुम कॉलेज नहीं गई ?

श्रीति क्या करू रविवार को कॉलेज बन्द रहता है।

राहुल अरे हा ! मै तो यह बिल्कुल ही भूल गया कि आज रविवार है क्या सोचने लग गई श्रीती ?

श्रीति यू ही कुलवीर भैया के बारे मे

राहुल कुलवीर बहुत परेशान है श्रीति। वो इतना बुरा नहीं है जितना तुम उसे समझ रही हो। मजबूरियो के आगे इसान बेबस हो जाता है। नौकरी पाने के लिए उसने क्या क्या नहीं किया ? कहा कहा नहीं भटका ?

श्रीति ठीक है उसे नौकरी नहीं मिली। लेकिन इसका ये मतलब तो नहीं कि नौकरी न मिलने पर इसान शराब पीना शुरू कर दे। आखिर शराब पीने के लिए भी वो कहीं न कहीं से पैसे लाता है। चोरी करता है डाका डालता है जुआ खेलता है ?

राहुल श्रीति

श्रीति किसी की जेब काटता है ?

(चिल्लाकर)

राहुल श्रीति किसी गरीब का इस तरह मजाक उडाना तुमको शोभा नहीं देता। कुलवीर के साथ उसकी मजबूरिया हैं उन्हे मैं जानता हू, तुम नहीं।

श्रीति तो तुम यह कहना चाहते हो कि कुलवीर के साथ मेरी कोई दुश्मनी है ?

राहुल यह मैं कब कह रहा हू लेकिन

(बीच मे)

श्रीति लेकिन वेकिन मैं नहीं जानती। मैंने जो कुछ कहा वो बिल्कुल सच है।

राहुल इसमे क्या सच है और क्या झूठ इसका अन्दाजा तुम नहीं लगा सकती।

श्रीति इसमे अदाज लगाने या न लगाने की बात ही क्या है ? कुलवीर के पिताजी इस उम्र मे दिन–रात मेहनत करते हैं तो क्या कुलवीर कोई छोटा–मोटा काम नहीं कर सकता ?

राहुल यही तो हमारे देश के नौजवानो की सबसे बडी कमजोरी है कि वो पढ–लिख जाने के बाद छोटा–मोटा काम करने में अपनी तौहीन समझते हैं। और यही एक कारण है कि आज हमारे देश के लाखो पढे लिखे नौजवान बेकार घूमते हैं और यह बेकारी सबसे ज्यादा इन्हीं पढे–लिखे लोगो मे है।

श्रीति लेकिन अपने घर के हालात देखते हुए इसान को कुछ न कुछ तो करना ही चाहिए। लेकिन इसके विपरीत कुलवीर अपने पिताजी के गाढे पसीने की कमाई को शराब की बोतलो मे बहा रहा है।

राहुल जो भी हुआ लेकिन अब ऐसा नहीं होगा श्रीति। उसने मेरे सामने कसम खाई है कि वो अब शराब को छुएगा तक नहीं।

श्रीति शायद उसे कसम खाये अर्सा हो गया है। मुझे अभी–अभी कुलवीर की बहन ने बताया कि रात को भैया ने शराब पीकर घर मे बडा उत्पात मचाया।

राहुल यह सब झूठ है मैं अभी कुलवीर के यहा होकर आया हूँ। नेहा ने मुझे तो कुछ नहीं बतलाया और रात दस बजे तक कुलवीर मेरे साथ था। मुझे कुछ भी यकीन नहीं आ रहा है।

श्रीति तुम्हें मेरी बात का यकीन आ भी कैसे सकता है। मैं तुम्हारी लगती ही क्या हू और कुलवीर तुम्हारा जिगरी दोस्त है। भाई से भी बढकर। लेकिन इतना खयाल रहे एक बहन अपने भाई की झूठी अफवाह कभी नहीं फैला सकती।

राहुल यह कैसे हो सकता है। कुलवीर ने कल मेरे सामने कसम

खाई कि वो मर जाएगा लेकिन शराब को छुएगा तक नहीं। मैं नहीं मानता कि इस बात मे थोडी भी सच्चाई है।

श्रीति सच तो यह है कि कुलवीर रात की बजाय दिन मे ही शराब के

(इसी दौरान कुलवीर का शराब पिये हुए प्रवेश)

ये लो विश्वास नहीं है तो अपनी आखो से देख लो।

(तेज रफ्तार से श्रीति का बाहर की ओर प्रस्थान)

कुलवीर क्या बात है राहुल मुझे देखते ही श्रीति चली क्यो गई ? लगता है मेरा यहा आना उसे अच्छा नहीं लगा।

राहुल अजान न बनो तेरे कारण सब लोग मुझसे कटने लगे हैं।

कुलवीर *आखिर हुआ क्या ? क्या बिगाडा है मैंने किसी का ?*

राहुल यह जो कुछ भी हो रहा है उस सबकी जड तुम हो सिर्फ तुम। सच पूछो तो मुझे भी तुमसे नफरत होने लगी है। श्रीति ठीक कह रही थी कि इसान जिन्दगी छोड सकता है लेकिन शराब नहीं।

कुलवीर सच है दोस्त जिन्दगी छोड सकता हू लेकिन शराब नहीं मैंने तुम्हारे सामने कसम खाई थी कि मैं शराब को छुऊगा तक नहीं लेकिन

(बीच मे)

राहुल तुम अपने आप से इतने गिर सकते हो। मैंने कभी सोचा भी नहीं था। तुम्हारे पिताजी पेट की आग को शात करने के लिए दिन रात मेहनत करते हैं। इस उम्मीद पर कि कुलवीर पढ लिख गया है। अब उन्हे कमाने की जरूरत नहीं पडेगी। लेकिन तुमने उनकी सारी उम्मीदो पर पानी फेरकर रख दिया। कुछ तो शर्म कर। जहा पूरी जिन्दगी फटी साडी मे लिपटी तेरी मॉ तेरे गमो को दिल मे लेकर ही खाक हो गई। वहा तुम्हारी जवान बहन पेट भरने के लिए पास–पडौस के घरो मे

(बीच मे बोलते हुए)

कुलवीर राहुल।

राहुल और कभी यह भी सुनने को मिल जायेगा कि फला लडकी ने

(चीखते हुए)

कुलवीर खुदा के लिए अब कुछ ना कहो राहुल। वरना मैं बहरा हो जाऊगा। मैं जिन्दगी से वैसे ही हार चुका हू। मैंने कई बार मरने की भी कोशिश की लेकिन बूढे पिताजी ओर नेहा के खयाल ने मुझे मरने नहीं दिया। उसी गम को भुलाने के लिए मैंने इस जहर का सहारा ले लिया। आज मैं फिर कसम खाता हू कि अब शराब को कभी हाथ नहीं लगाऊगा।

राहुल यह झूठी कसमे तुम कई बार खा चुके हो। लेकिन टिके भी हो उन कसमो पर ? अच्छा यही है कि दफा हो जाओ यहा से। खूब पीओ जी भर के पीओ। पैसे नहीं हैं तो यह ले।

(राहुल जेब से रुपये निकालकर कुलवीर पर फेकता है)

कुलवीर नहीं नहीं राहुल मैं मर जाऊगा लेकिन इस जहर को हाथ नहीं लगाऊगा। एक बार मुझे और माफ करदे दोस्त।

राहुल क्यो माफ करू और क्या मना करू ? मैं तुम्हे शराब पीने के लिए कभी मना नहीं करुगा। मैं तुम्हारा लगता क्या हू ?

(बीच मे)

कुलवीर अब और जलील न करो मेरे भाई। मेरे बुरे वक्त मे जितना तुमने मेरा साथ दिया है उतना तो मेरे हमसीरा बहन भाइयो ने भी मेरा साथ नहीं दिया। भगवान कसम राहुल आज के बाद मैं तुम्हे कभी दुखी नहीं करुगा सिर्फ आज आखरी बार मुझे माफ कर दो।

राहुल मैंने सोचा था कि आज मैं तुम्हे सरप्राइज दूगा वो सरप्राइज कि

(बीच मे बोलता है)

कुलवीर गुस्सा थूक दो राहुल। सोच लो कि वो कुलवीर मर गया

जो शराब मे धुत रहता था।

(आख पोछते हुए)

राहुल तुम्हे मालुम है तुम्हारा एअरफोर्स मे सलेक्शन हो गया है ?

कुलवीर लेकिन मेने तो सुना था कि वहा भी भाई भतीजावाद का बोल बाला है।

राहुल गलत सुना है तुमने यह रहा तुम्हारा पोस्टिग ऑर्डर

कुलवीर नहीं दोस्त। ऐसी मेरी तकदीर कहा मैं तो एक गदी नाली का कीडा हू और एक दिन कीचड मे ही दम तोड दूगा।

राहुल नहीं हम खुशकिस्मत हैं कि हमे देशसेवा करने का एक सुअवसर मिला है।

कुलवीर यह सच है दोस्त। मैदाने जग मे एक बहादुर की मौत मरना इस जिन्दगी से लाख अच्छा है। आज का दिन मेरी जिन्दगी का सब से बेहतरीन दिन है कि मुझ जैसे इनसान को यह सुनहरा अवसर मिला है। मै तुम्हारा एहसानमन्द हू राहुल कि तुमने मुझे

(बात काटते हुए)

राहुल जो गुजर चुका है उसे भूल जाओ। अब आगे की सोचो और चलने की तैयारी करो क्योकि बीस तारीख को एनी हाउ हमे बैंगलोर पहुचना है।

(राहुल के हाथो को चूमते हुए)

कुलवीर थैंक्यू दोस्त थैंक्यू वेरी मच।

(कुलवीर का प्रस्थान दीनानाथ का प्रवेश)

दीनानाथ गाडी के आने का वक्त हो गया है छोटे सरकार स्टेशन नहीं जाना ?

राहुल अरे हॉं चाचा मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था। अब तक तो ट्रेन भी आ चुकी होगी।

(बाहर की ओर से पार्वती का प्रवेश)

अरे मम्मी तुम आ भी गई ? बस में स्टेशन पहुॅच ही रहा था।

पार्वती कोई बात नहीं श्रीति स्टेशन पर आ गई थी।

राहुल ओ मम्मी आई एम वेरी सोरी।

(पावो मे झुकता है।)

पार्वती जीते रहो लेकिन तुमने ये हुलिया क्या बना

राहुल हॉ मम्मी तुम जिस काम के लिए गई थी उस काम का क्या हुआ ?

पार्वती क्या बताऊ बेटे। इनसान क्या सोचता है और क्या हो जाता है।

राहुल क्यो क्या हुआ मम्मी ?

पार्वती अरे बेटे वहा का रिवाज भी अजीब हे। मैंने तुम्हारे शादी की बात शुरू की तो वे लोग एकदम बदल गये। श्रीति के पिताजी कहने लगे कि हमारे गाव का ही एक पढा लिखा लडका श्रीति बेटी के बदले मे एक लाख रुपया नगद देने को तैयार है।

(बीच मे)

राहुल कुछ देने की बजाय ऊल्टा दहेज माग रहे हैं ?

पार्वती हा वेटे। मुझे तो बडा गुस्सा आया और मैंने बोल भी दिया कि तुम अपनी लडकी का मोल कर रहे हो। लेकिन बीच मे ही श्रीति का मामा विश्वनाथ बोल पडा। हमने श्रीति बेटी को इसलिए नहीं पढाया लिखाया कि उसे हर किसी के पल्ले यू ही बाध दे।

रमेश इतना घमण्ड है अपनी पढी लिखी बेटी पर ?

पार्वती क्या जमाना आ गया है बेटे। चलो यह भी अच्छा हुआ जो शादी के पहले ही उन लोगो की जात का पता चल गया वरना बाद मे सिरदर्द बनते। लेकिन तू चिन्ता मत कर बेटे मैं तुम्हारे लिए एक नहीं हजार

(श्रीति प्रवेश करके)

श्रीति क्या बात है मम्मी राहुल का मुह कैसे चढा हुआ है ?

राहुल गाव जाकर अपने बाप से पूछो कि क्या सलूक किया है

उन्होने मम्मी के साथ ? अगर ऐसा ही था तो गाव आने के लिए मम्मी को लिखा ही क्यो था ?

(बीच मे)

पार्वती लेकिन इसम श्रीति वेटी का क्या दोष हे वेटे ? अगर वे लोग नहीं मानते हैं तो मैं तुम दोनो की शादी आर्य समाज मे करा दूगी।

(बिगडते हुए)

राहुल रहने दो मम्मी मुझे किसी से कोई शादी–वादी नहीं करनी।

श्रीति आखिर हुआ क्या ? मुझे नहीं वतलाओगी मम्मी ?

(पार्वती का अन्दर जाना)

राहुल क्या करोगी सुनकर। तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारी शादी मे एक लाख रुपये नगद की माग की है। क्यो ! हमे कोई दूसरी लडकी मिलती नहीं या देश मे अकाल पड गया है लडकियो का ?

श्रीति ऑफ हो ! इतनी छोटी सी रकम के लिए तुम इतने बौखला रहे हो ?

राहुल एक लाख छोटी रकम है ?

श्रीति शहरो मे लडके बिकते हैं। दहेज मे लाखो की डिमाण्ड करते हैं। मैं एम बी ए हूँ और हम एक दूसरे को प्यार भी करते हैं।

(जोर से)

राहुल करता था। आज से मैंने अपना इरादा बदल दिया है समझी आप।

श्रीति इरादा बदल लिया है ! लेकिन अव मेरा क्या होगा ?

राहुल गाव जाकर अपने बाप से पूछो ?

श्रीति तो तुमने प्यार मेरे बाप से पूछकर किया था ? तुम मेरे प्यार के लिए एक लाख भी खर्च नहीं कर सकते ? आखिर ये करोडो की जायदाद तुम्हारे किस काम आयेगी ?

राहुल — यह जायदाद मेरे पिताजी लडकिया खरीदने के लिए छोडकर नहीं गये हैं। जाकर कह दो अपने बाप को शादी करनी है तो

(बीच म बोलती है)

श्रीति — लेकिन मेरे पिताजी ऐसे मानने वाले नहीं है। पैसे के मामले मे वो बहुत ही लालची हैं।

राहुल — मानने वाले नहीं हैं तो एक लाख मेरे पास भी देने को नहीं हैं।

श्रीति — ठीक है मैं आर्य समाज मे शादी करने को तैयार हू। *(राहुल का हाथ पकडकर)* आओ चले।

राहुल — कहा ?

श्रीति — आर्य समाज।

(हाथ छुडाकर)

राहुल — अब्बाजी का राज है ? भूल जाओ मुझे और चली जाओ यहा से। मुझे कोई शादी वादी नहीं करनी।

श्रीति — शादी नहीं करनी तुम्हारे कहने से क्या होता है ? मैंने तुमसे प्यार किया है कोई मजाक नहीं अगर ऐसा ही है तो अब मेरा क्या होगा ?

राहुल — मैंने बोला ना गाव जाकर अपने बाप से पूछो।

श्रीति — तुमने मुझसे प्यार मेरे बाप से पूछकर किया था ? अगर मेरे बाप को यह पता लग गया कि मै तुमसे प्यार भी करती हू तो वो शादी की रकम बढाकर दो लाख कर देगे।

राहुल — अगर ऐसी बात थी तो तुमने मुझे पहले क्यो नहीं बतलाया कि तुम्हारा बाप इतना लालची और लीचड है।

श्रीति — इसके बारे में तुमने मुझसे पूछा ही कब था ?

राहुल — चाहे कुछ भी हो। मैं उन्हें एक पैसा देने वाला नहीं हू। अगर वो बन्दूक उठायेगे तो मैं रिवाल्वर।

श्रीति — तो तुम उनका मुकाबला करोगे ? लोग बाग क्या कहेगे पूरे गाव में तुम्हारी इज्जत मिट्टी मे मिल जायेगी। वो भी दो

लाख रुपयो की खातिर।

राहुल दो लाख नहीं एक लाख अभी से तुम रकम क्यो बढा रही हो ? वो तो बात बिगडने पर है।

श्रीति लेकिन तुम्हे तेयारी तो पूरी करके ही चलना होगा वरना ऐन वक्त पर पैसे के लिए कहा भागते फिरोगे ? सुनो राहुल!

राहुल क्या है ? जल्दी बोला।

श्रीति अगर तुम कहो तो मैं बापू को चिटठी लिखकर कहूँ कि कुछ तो रियायत करे लडका पढा लिखा है और बेचारे के बाप भी नहीं है।

रुहल रहने दो अगर तुम्हारा बाप इतना ही कमीना है तो वो एक पैसा भी कम करने वाला नहीं है।

श्रीति रियली तुम कितने अच्छे हो राहुल।

राहुल जितना मैं अच्छा हू, उतना ही कमीना है तुम्हारा बाप।

श्रीति अब कुछ भी कहलो तुम जैसे भी हैं हमे निभाना तो पडेगा ही।

राहुल अगर तुम्हारा खयाल नहीं होता तो मैं उस बूढे को गोली मार देता।

(श्रीति जाने लगती है)

राहुल कहॉ जा रही हो ?

श्रीति पिताजी से फोन पर बात करती हूँ, शायद कुछ रियायत कर दे।

राहुल रहने दो उनसे कोई बात नहीं करनी मैं दो लाख तो क्या तुम्हारे लिए जितना मागेगे उतना देने को तैयार हूँ।

श्रीति रियली यू आर ग्रेट अब मैं चलती हूँ।

(श्रीति का प्रस्थान)

राहुल साला भीखमगा कहीं का लडकियो का सौदा करता है।

(पार्वती का प्रवेश)

पार्वती श्रीति कहाँ है बेटे ?

राहुल चली गई। मम्मी क्या फैसला किया है तुमने श्रीति के बारे मे ? क्योकि उसका लालची बाप एक लाख से एक पैसा भी कम करने वाला नहीं। श्रीति बतला रही थी उसका बाप बडा लालची है उसने अपनी बडी लडकी की शादी मे भी लडके वालो से दो लाख रुपये नगद लिए थे।

पार्वती अरे ! तू सचमुच गधा है।

राहुल क्यो क्या हुआ दो लाख रुपये कुछ मायने नहीं रखते ?

पार्वती अरे बेवकूफ ! तू मुझे स्टेशन लेने नहीं आया था ना इसलिए श्रीति बेटी ने तुमसे दिल्लगी करने की कसम दिला दी थी मुझे।

राहुल दिल्लगी और मेरे साथ ? यह तुम क्या कह रही हो मम्मी ?

पार्वती और नहीं तो क्या ? इसलिए मैं तुम दोनो को झगडते देखकर अन्दर चली गई थी।

राहुल मारे गये गुलफाम मैंने श्रीति के बाप को न जाने क्या क्या बोल दिया। सच मम्मी यह सब नाटक था ?

पार्वती और नहीं तो क्या ? ऐसा भी कभी हुआ है जो वो मुझसे पैसे मागते ?

राहुल श्रीति मुझे कभी माफ नहीं करेगी मम्मी।

पार्वती अरे बेटे वो लोग बहुत ही भले लोग हैं। इस रिश्ते से खुश होकर पूरा गाव मुझे स्टेशन तक छोडने आया और खुशी की बात तो यह है बेटे कि मेरे लाख मना करने के बाद भी वो तुम्हे

(बीच मे बोलता है)

राहुल एक खुशखबरी मैं भी तुम्हे सुनाता हू, मम्मी मेरा एअरफोर्स मे सलेक्शन हो गया है।

पार्वती पागल हो गया हैं तू ?

राहुल यह देखो मेरा अपाइन्टमेन्ट लेटर।

पार्वती और मैं जो शगुन करके आई हू। उसका क्या होगा ?

बाईस तारीख बसत पचमी को बारात जानी है।

राहुल लेकिन मेरा बीस तारीख को बगलौर पहुचना बहुत जरूरी है मम्मी वरना ऑर्डर कैन्सिल हो जाएगे।

पार्वती हो जाने दे मैं तुम्हे कहीं नहीं भेजने वाली।

राहुल बात को समझने की कोशिश करो। मेरा एअरफोर्स मे सलेक्शन हुआ है मम्मी।

(बात काटते हुए)

पार्वती मर गई तुम्हारी मम्मी अगर आइन्दा फौज में जाने का नाम भी लिया तो तू मेरा मरा मुँह देखेगा।

(बीच मे ही)

राहुल क्या कह रही हो मम्मी हजार कोशिश के बाद भी लोगो का एयरफोर्स मे सलेक्शन नहीं होता। तुम्हे खुशी नहीं होगी कि मैं भी डैडी की तरह एक बहादुर फौजी अफसर बनू।

पार्वती मै कहती हू, बन्द कर भाषण। जो सपने मैंने सजोए हैं तू उन्हे बिखेर देना चाहता है ?

राहुल तुम इतनी बुजदिल हो मम्मी तो मुझे एन सी सी क्यो ज्वाइन करने दी। बचपन से ही देश के प्रति वफादार रहने का सबक क्यो सिखलाया ?

पार्वती एन सी सी ज्वाइन करने का ये मतलब नहीं कि फौजी शिक्षा लेने के बाद प्रत्येक नागरिक को फौज मे भरती होना ही पडे। वैसे फौजी शिक्षा लेना प्रत्येक नागरिक के लिए जरूरी है ताकि जरूरत के वक्त वो देश के काम आ सके।

राहुल तो तुम यह कहना चाहती हो कि हमारे देश को हमारी जरूरत नहीं ?

पार्वती यह मैं कब कह रही हू। देश को हमारी जरूरत है और हमेशा रहेगी। जरूरत पडने पर मैं देश की खातिर सब कुछ न्यौछावर कर दूगी। लेकिन अभी तुमने जो फैसला किया है वो गलत है मैं तुम्हे किसी भी शर्त पर

फौज मे नहीं जाने दूगी।

राहुल हर एक नागरिक का यह फर्ज बनता है मम्मी कि वो किसी न किसी रूप मे देश के काम आवे। मैं भी जवान हू। इस देश का नागरिक हू। फौज के काबिल हू। मेरा देश मुझे भी पुकार रहा है।

पार्वती तेरा देश के प्रति इतना फर्ज है और अपनी विधवा मा के प्रति तेरा कोई फर्ज नहीं ? तुम्हे पाला पोसा इतना बडा किया। उस मा की खातिर तेरा कोई फर्ज नहीं ?

राहुल मम्मी तुम अपने स्वार्थ के लिए देश के प्रति जो तुम्हारा फर्ज है उसे क्यो भूल रही हो ? क्या वे नौजवान अपनी माता पिता के प्यारे नहीं जो चट्टान बनकर दुश्मन की तोपो के सामने सीना ताने खडे हैं ?

पार्वती यह मैं कब कह रही हू। मुझे नाज है देश के उन नौजवानो पर।

राहुल इसलिए कि वे नौजवान तुम्हारी अपनी औलाद नहीं ? *(चिल्लाकर)*

पार्वती राहुल।

राहुल सन् पैंसठ के तूफान को याद करो मम्मी। जिस तूफान मे न जाने कितने दीप बुझ गये और आज भी अनेकानेक दीप देश की शान की खातिर बुझ जाने के लिए बेताब हैं। क्या यह देश सिर्फ उन्हीं का है अपना नहीं ?

पार्वती वो सब ठीक है। मैं सब जानती हू लेकिन सबकी अपनी अपनी मजबूरिया होती हैं।

राहुल मत भूलो मम्मी कि तुम भी फौज मे एक डॉक्टर मेजर थी और एक बहादुर मेजर की बहादुर बीवी भी। यह कायरता तुमको शोभा नहीं देती।

पार्वती अपनी मम्मी को पाठ पढाता है तू ?

राहुल मैं झूठ क्या कह रहा हू मम्मी ? क्या वे नौजवान अपने माता पिता को प्यारे नहीं जो वर्षो से सरहद पर पडे हुए हैं जहा इसान तो क्या चील और कौवे तक नजर नहीं

आते। वे नौजवान किसी के भाई नहीं या किसी की भाग के सिन्दूर ।

पार्वती बन्द कर भाषण और अन्दर जाकर कपडे बदल। आज साय को श्रीति के पिताजी दस्तूर करने आ रहे हैं।

राहुल दूसरे घरो मे लगी आग सुनहरी लगती है मम्मी ? (चिल्लाकर)

पार्वती तुम अपनी मा के जज्बातो से खेलने की कोशिश कर रहे हो राहुल। इस देश की हर औरत दुर्गावती और रानी झासी से कम नहीं फिर भी वो एक अबला है। सब कुछ होते हुए भी वो बेसहारा है। तेरे पिताजी मोर्चे पर कमाण्ड कर रहे थे और दुश्मनो ने एकाएक उन्हे तीन ओर से घेर लिया था लेकिन तेरे पिताजी ने भाग निकलने या पीछे हटने की बजाय दुश्मनो का डटकर मुकाबला किया। एक डॉक्टर मेजर की हैसियत से मैं भी तुम्हारे डैडी के साथ मोबाइल डयूटी पर थी। तुम्हारे डैडी को दुश्मन की गोली लगी। वे जख्मी हो गये और मुझे वहा से निकल जाने का मैसेज मिला लेकिन मैंने उन्हे साफ मना कर दिया। मैंने कैम्प से निकलकर एक ओर मोर्चा सभाल लिया और उस वक्त तक दुश्मनो पर गोलिया चलाती रही जब तक दुश्मन वहा से भाग नहीं छूटा। अपने सुहाग को तीन किलोमीटर पैदल रेगते हुए दुश्मनो के क्षेत्र से बाहर निकाल अपनी सीमा मे ले आई। गोली लगने के कारण मैं तुम्हारे डैडी को बचा तो नहीं सकी लेकिन उनके पार्थिव शरीर को दुश्मनो के हाथ नहीं लगने दिया। सरकार की तरफ से इस बहादुरी के लिए मुझे एक साथ वीर एव परमवीरचक्र प्रदान किये गए।

राहुल इतनी बहादुरी के बाद भी तुम मुझे फौज मे जाने के लिए क्यों मना कर रही हो ?

पार्वती हॉ मेरी कोई मजबूरी है मैं तुम्हे फोर्स ज्वायन नहीं करने दूगी। चाहे इसके लिए मुझे कुछ भी करना पडे।

राहुल तो मेरी भी बात सुनलो मम्मी मैं फौज मे जरूर जाऊगा

चाहे मुझे इसके लिए कुछ भी करना क्यो न पडे।

(मारते हुए)

पार्वती हरामखोर मेरे सामने जुबान चलाता है ? चला जा यहॉ से।

(राहुल का बाहर की ओर प्रस्थान पार्वती कैलाशदान की तस्वीर के पास जाकर)

देख रहे हैं आप बतलाइए इस हालत मे मैं राहुल को फौज मे कैसे भेज सकती हू ?

(राहुल की पार्श्व से आवाज)

राहुल यह तुम क्यो भूल रही हो मम्मी कि तुम भी एक बहादुर अफसर की बहादुर बीवी हो।

(नैपथ्य से पार्वती की आवाज)

पार्वती क्या सोच रही हो पार्वती ?

(नैपथ्य से)

राहुल जरा सोचो मम्मी वे नौजवान भी अपने माता पिता को प्यारे होगे जो वर्षों से देश की सरहद पर पडे हुए है। जहा इसान तो क्या चील कौवे तक नजर नहीं आते।

(नैपथ्य से)

पार्वती क्यो पार्वती अगर राहुल फौज मे चला गया

(नैपथ्य से)

राहुल मम्मी तुम्हारी बहादुरी के लिए सरकार ने तुम्हे एक साथ दो दो वीरचक्र प्रदान किये है वीरचक्र वीरचक्र.. वीरचक्र

(चिल्लाकार)

पार्वती नहीं चाहिए मुझे वीरचक्र मैं वापिस लौटा दूगी वीरचक्र

(धीरे धीरे पूर्ण अन्धकार)

तीसरा दृश्य

(धीरे धीर मच पर प्रकाश उभरता है कमरा पहले की भाति सजा हुआ है। कमरे के बीचो बीच राहुल व श्रीति खडे नजर आ रहे हैं।)

श्रीति मेरी समझ मे तो यह नहीं आ रहा है कि अचानक देश के प्रति यह हमदर्दी तुम्हारे दिल मे आई कैसे ?

राहुल यह अचानक दिल की उपज नहीं है श्रीति। बहुत दिनो से मैं इस ओर सोच रहा था।

श्रीति लेकिन इससे पहले तुमने कभी मेरे सामने इस बात का जिक्र तो नहीं किया।

राहुल मुझे डर था कि तुम लोग कोई हगामा खडा कर दोगे और आज वही बात मेरे सामने है।

श्रीति फौज में जाने के लिए मैं तुम्हे मना नहीं कर रही हू लेकिन जाने से पहले कम से कम यह तो सोच लिया होता कि तुम अपनी विधवा मॉ की इकलौती सतान हो।

राहुल तुम भी ऐसा कह रही हो श्रीति ? क्या आज की स्थिति को तुम नहीं जानती ?

श्रीति मैं सब जानती हू। मेरा भी देश के प्रति उतना ही अगाध प्रेम है जितना किसी और का। लेकिन सबकी अपनी-अपनी परिस्थितिया और अपनी अपनी मजबूरिया होती हैं उन्हीं को ध्यान मे रखकर आगे का कदम उठाना पडता है।

राहुल लेकिन मुझे एक ही आवाज सुनाई दे रही है कि देश को मेरी जरूरत है।

श्रीति *मैं तुम्हारे पाव की बेडी बनना नहीं चाहती हू राहुल। मैं भी* चाहती हूँ कि तुम फौज मे जाओ लेकिन तुम्हारी मम्मी

(बात काटते हुए)

राहुल मुझे अफसोस है श्रीति। मैं समझता था कि तुम मुझे इस शुभ कार्य के लिए उत्साहित करोगी और सहर्ष मुझे विदा करने के लिए मम्मी को राजी कर लोगी। उल्टा तुम उनका कमजोर पक्ष लेकर समस्या को और जटिल बना रही हो।

श्रीति मैं जानती हू राहुल। यह देश हमारी मातृभूमि है और इसकी हिफाजत करना हम सब का फर्ज है। मैं अपने प्यार को इस बलिवेदी पर सहर्ष चढा सकती हू लेकिन तुम्हारी मम्मी को कैसे समझाऊ ? उनका एक ही कहना है कि मेरा एक ही बेटा है। तुम्हे इस कदर जिद नहीं करनी चाहिए। मम्मी की उम्र भी अधिक हो गयी है अगर मम्मी को कुछ हो गया तो तुम्हारी आत्मा तुम्हे कोसने लगेगी। वहा तुम मम्मी को याद करके अपने-आप को बोझिल महसूस करने लगोगे। इसलिए अच्छा यही है कि मम्मी का कहा मान लो या फिर फौज मे जाने के लिए मम्मी को किसी भी तरह राजी करो उन्हे पूरी तरह मनाओ।

(झुझलाते हुए)

राहुल कुछ समझ में नहीं आता कि तुम समझदार होकर मम्मी का पक्ष क्यो ले रही हो ?

(बाहर से कुलवीर का प्रवेश)

कुलवीर इसलिए कि तुम मम्मी की मजबूरियों को नहीं समझ पा रहे हो और खामख्वाह भावुक बने जा रहे हो।

राहुल कुलवीर तुम ?

कुलवीर हा मैं मैं भी तुम्हे यह कहने आया हूँ कि इनसान को प्रत्येक काम सोच समझकर ही करना चाहिए ताकि बाद मे मेरी तरह किसी को पछताना नहीं पडे।

राहुल तुम्हें इसलिए पछताना पडा कि तुम तबाही के रास्ते पर थे और मेरे कदम सही मजिल की ओर बढ रहे हैं।

कुलवीर सही और गलत क्या है उसे अभी छोडो। मैं इतना ही कहने आया हू कि मैं भी श्रीति और तुम्हारी मम्मी की राय से इत्तफाक करता हू कि तुम्हे फौज मे जाने के लिए इस कदर जिद नहीं करनी चाहिए।

राहुल तो क्या तुम भी मेरा साथ नहीं दोगे ?

कुलवीर इसमे साथ देने या न देने की बात ही क्या है दोस्त। फौज मे जाने के लिए हम जैसो की कमी नहीं। फिर किसी को घर का मोर्चा भी तो सभालना है। यहा रहकर भी तुम देश की बहुत सारी सेवाए कर सकते हो। देशसेवा के और भी कई सारे तरीके हैं सिर्फ देश के लिए मर मिटना ही देशभक्ति नहीं।

राहुल यह बात तुम कह रहे हो ?

कुलवीर बेसहारा मम्मी की उम्मीदो और श्रीति के बेलौस प्यार को तुम बरबादियो के हवाले कर देना चाहते हो ?

(चिल्लाकर)

राहुल कुलवीर !

कुलवीर उनका दामन फूलो की बजाय आसुओ और सिसकियो से भर देना चाहते हो ?

(बिगडते हुए)

राहुल कुलवीर !

कुलवीर किसी का सुख चैन छीन लेने का तुम्हे कोई हक नहीं है दोस्त।

राहुल जलील न करो। क्या मोहब्बत करने वालो को फौज मे जाने की मनाही है ? मोहब्बत और फर्ज एक दूसरे के दुश्मन तो नहीं ? तुम सब लोगो ने मिलकर मेरा दिमाग खराब कर डाला है। मैं फौज मे जाऊगा और मुझे काई रोक नहीं सकता।

कुलवीर देखो राहुल एक बात मेरी भी सुन लो अगर तुमने फौज मे जाने की जिद की तो मैं फोर्स ज्वायन नहीं करूगा।

राहुल मेरी बला से भाड में जाओ तुम मैं फौज मे जरूर जाऊगा जरूर जाऊगा। कोई खुदाई मुझे नहीं रोक सकती।

(दीनानाथ प्रवेश करके)

दीनानाथ फौज मे जाने स पहले अगर आप मालकिन की मजबूरियो को समझने की कोशिश करते तो आप फौज मे जाने की जिद कभी नहीं करते छोटे सरकार।

(तेज स्वर मे)

राहुल क्या कहना चाहते हैं आप ?

दीनानाथ क्या आप जानते हैं छोटे सरकार कि आपको फौज मे नहीं भेजने का सही कारण क्या है ?

राहुल तो ऐसा कौनसा राज है जो मुझसे छिपाया जा रहा है ?

दीनानाथ अगर आप जानना ही चाहते हैं कि वो राज क्या है। तो जरूर सुनिए आप मालकिन के पास किसी की अमानत हैं।

राहुल चाचा क्या कहना चाहते हैं आप ?

दीनानाथ गुस्ताखी माफ हो छोटे सरकार आप मेजर कैलाशदानजी की सतान नहीं बल्कि उनके धर्मपुत्र हो।

(बीच मे ही चिल्लाकर)

राहुल चाचा आपका लिहाज करने का ये मतलब नहीं कि आप अपनी औकात ही भूल जाये।

दीनानाथ आप कुछ भी कह दीजिए छोटे सरकार लेकिन यह सच है। बीस साल पहले मालिक ने आपको बनवारीलालजी से गोद लिया था।

(बीच मे ही बिगडकर)

राहुल इससे पहले कि मैं आपके साथ बदतमीजी से पेश आऊ चले जाइए यहा से। मैं सब जानता हू, मुझे फौज मे जाने से रोकने के लिए तुम सब लोग मिलकर मेरे खिलाफ झूठा जाल बिछा रहे हो।

दीनानाथ जाल नहीं यह हकीकत है छोटे सरकार। मैं जानता हू

मालकिन ने आपको सिर्फ मा की ममता ही नहीं बल्कि एक बाप का प्यार भी दिया है। ढेर सारा प्यार। लेकिन उस प्यार का यह मतलब नहीं कि आप उनकी सारी उम्मीदो पर पानी फेर दो।

(बीच मे चिल्लाकर)

राहुल जुबान को लगाम दो चाचा। मत भूलो कि तुम इस घर के नौकर हो। इससे ज्यादा इस घर मे तुम्हारी कोई औकात नहीं

(इस बीच पार्वती प्रवेश करके चिल्लाते स्वर मे)

पार्वती राहुल दीनानाथ के साथ कोई बदतमीजी करो उससे अच्छा यही है कि तुम जहा भी जाना चाहो दफा हो जाओ यहा से।

राहुल मम्मी

पार्वती क्योकि सच बात को कहा तक छुपाया जा सकता है। दीनानाथ ने जो कुछ भी कहा है वो सब कुछ सत्य है। तुम मेरे पुत्र नहीं धर्मपुत्र हो।

राहुल मम्मी मैं कहीं नहीं जाऊगा। सिर्फ इतना कह दो कि यह सब झूठ है। कह दो मम्मी मैं आपका ही बेटा हू। *(पलटकर)* आप कह दे चाचा कि आप लोग मेरे साथ मजाक कर रहे हैं।

दीनानाथ यह सच है छोटे सरकार अगर आप इन हालात मे फौज मे चले जाते हैं तो मालकिन आपके पिताजी बनवारीलालजी को क्या जवाब देगी ?

(बनवारीलाल का प्रवेश)

बनवारी मुझे मेरा जवाब मिल गया दीनानाथ।

(बीच मे बोलकर)

पार्वती रायसाहब आप और इस वक्त यहा ?

बनवारी हा भाभी। मुझे यहा आने को मजबूर होना पडा। वर्षों पुराना कौल आज तोडना पडा क्योकि दीनानाथ से मुझे

सारी स्थिति का पता लग चुका है। राहुल पर मैंने न तो पहले कभी अपना अधिकार समझा और ना ही आज उस पर मेरा अधिकार है। राहुल सिर्फ मेजर कैलाशनाथजी का बेटा है। आप चाहे तो बडे शौक से राहुल को फौज मे जाने की इजाजत दे सकती हैं। मुझे तो इस बात की खुशी होगी कि मेरा बेटा वतन का एक सिपाही बनकर देश की आजादी को बरकरार रखने के लिए देश की सरहद पर अपना सीना ताने खडा है।

पार्वती यह आप कह रहे हैं रायसाहब ?

बनवारी हा भाभी मैं राय बनवारीलाल ही बोल रहा हू। मैंने भी तीस साल मिलिट्री की ठेकेदारी करके एक फौजी अफसर सा दिल पाया है।

(राहुल पाव छूते हुए)

राहुल मुझे आशीर्वाद दीजिए पिताजी।

बनवारी जुग जुग जीयो बेटे। तुम्हे आशीर्वाद देकर मैं कितनी खुशी महसूस कर रहा हू कि तुम्हारे दिल मे देश के प्रति त्याग के जज्बात पैदा हुए। काश ! यह हौसला हिन्दुस्तान के हर जवान का हो। लेकिन फोर्स ज्वाइन करने से पहले तुम्हे एक अहद करना होगा तुम हसते हसते वतन की खातिर अपनी जान लुटा दोगे मगर देश की परम्परा के अनुसार दुश्मन को अपनी पीठ नहीं दिखाओगे।

(राहुल जमीन को छूकर)

राहुल मादरे वतन की कसम। जब तक जिस्म मे लहू का एक भी कतरा बाकी होगा मैं जिन्दगी की आखिरी सास तक दुश्मनो का डटकर मुकाबला करूगा और उनके नापाक इरादो को मिट्टी मे मिला दूगा।

बनवारी शाबास बेटे देश के मुहाफिज का खुदा हाफिज होता है।

(राहुल बनवारीलाल के पैरो मे झुकता है।)

(धीरे धीरे पूर्ण अन्धकार)

काश, ऐसा हो !
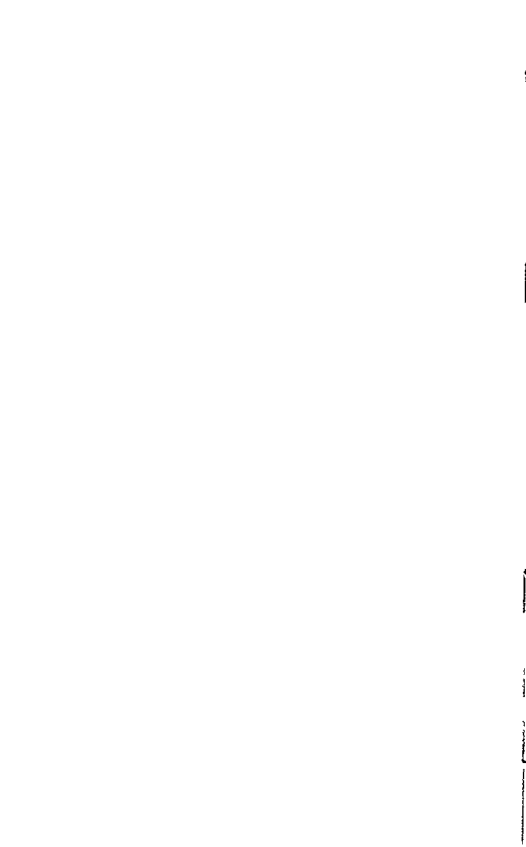
काश, ऐसा हो !

प्रथम दृश्य

(दीवानचन्द की हवेली का एक कमरा कमरे की सजावट से सेठ दीवानचन्द की सम्पन्नता का आभास हो जाता है।)

(नेपथ्य से)

आवाज माननीय अतिथिगण आदरणीय दर्शकगण आयोजित कार्यक्रम मे आपके पधारने का आभार। कार्यक्रम शुरू करे उससे पहले क्यो नहीं हम दो क्षण मा सरस्वती को याद कर ले जो पूरे जग को प्रेरणा एव शक्ति प्रदान करती है।

(नेपथ्य से ही सरस्वती वदना)

तो लीजिए श्री सूरजसिह पवार द्वारा लिखित नाटक 'काश ऐसा हो !

(दर्शको मे से एक आवाज)

आवाज ठहरिये।

(दर्शको के बीच से एक नौजवान उठता है और लपक कर मच पर चढ जाता है एक गोलाकर प्रकाश मे सूत्रधार)

नाटक शुरू होने से पहले मैं आप सभी महानुभावो से एक प्रश्न पूछना चाहूगा अगर आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया तो यह नाटक देखने का किसी शख्स को कोई अधिकार नहीं। आज रात हमारे ही शहर के जाने माने समाजसेवी सेठ दीवानचन्द के सुपुत्र विमलकुमार का विवाह शहर के जाने माने सेठ मनोहरलालजी की इकलौती

लडकी सुश्री सुनीता के साथ होना सुनिश्चित हुआ है। कितनी खुशी की बात है कि आज दो अनजाने दिल हमेशा हमेशा के लिए एक सूत्र मे बध जाएगे और जिन्दगी के लम्बे दौर मे एक साथ जीएगे मरेगे और अपने मन मे सजोए सपनो को साकार करेगे। लेकिन कौन कह सकता है कि जीवन के इस लम्बे दौर मे यह हसा का जोडा सुखी रह पाएगा ?

आप कह सकते हैं आप आप या आप ? नहीं कोई मर्द का बच्चा अपना सीना ठोककर यह नहीं कह सकता कि यह जोडा जीवन के इस लम्बे दौर मे सुखी रह पाएगा। कारण ? कारण आप सभी लोग जानते हैं कि शादी के बाद सिर्फ वो ही लडकी सुखी रह सकती है जो ज्यादा से ज्यादा दहेज के साथ अपने ससुराल जाए। मैं गलत कह रहा हू ? बिल्कुल नहीं क्योकि आप सब लोग जानते हैं सब लोग क्यो देश का प्रत्येक नागरिक जानता है कि यह दहेज रूपी कैन्सर सिर्फ अपने ही देश मे फैला हुआ है और दिन–ब–दिन फैलता ही जा रहा है। हमारे धर्म मे 'कन्यादान को बहुत बडा धर्म माना गया है। इसलिए कई हिन्दू परिवार कन्या के अभाव मे पराई कन्या को गोद लेकर कन्यादान करते हैं। युग–युगान्तर से कन्याओ को चण्डी का रूप मानकर उनकी पूजा की जाती है। एक तरफ यह पवित्र रिश्ता और दूसरी ओर उसी पवित्र रिश्ते के साथ सौतेला व्यवहार। लडकी पैदा हुई नहीं कि उसे घर के कामकाज मे डाल दिया क्योकि बडा होने पर उसे ससुराल जाना है। फिर वर की तलाश अच्छे वर के लिए हजारो लाखो का बन्दोबस्त क्योकि जरा से कम दहेज के परिणाम को कौन नहीं जानता ? एक बेहतरीन दृढ निश्चय के साथ तैयार किया गया एक खूबसूरत बहाना खाना बनाते समय स्टोव फट गया और नई नवेली दुल्हन जलकर राख। अन्धा कानून किसी का कुछ नहीं बिगाड सकता क्योकि कानून को ठोस सबूत और चश्मदीद गवाह चाहिए। जो कभी मिलता नहीं। यही

कारण है कि लडकी पैदा होते ही हर माता पिता के चेहरे पर मायूसी छा जाती है। विडम्बना है कि माता पिता न चाहते हुए भी अपनी कोख से जन्मी उस मासूम जान को अपने जिगर के टुकडे को उस वीरागना को उस झासी की रानी को भावी बेटी इन्दिरा को जहर का घूट समझने लगते हैं।

(सूत्रधार का प्रस्थान व नाटक का प्रारम्भ)

(अन्दर से सेठ दीवानचन्द का बडा लडका विजय जो पागल है बोल नहीं सकता अपने घर के नौकर सुबीराम को अपनी पीठ पर लाद कर कमरे मे प्रवेश करता है। सुबीराम के एक हाथ मे दूध का बर्तन है। सुबीराम चिल्लाते स्वर मे।)

सुबीराम अरे अरे मै गिर जाऊगा विजय बेटे मुझे नीचे उतारो सुनो बेटे

(विजय कमरे मे चक्कर काटता है)

अरे छोडो बेटे। गिर गया तो मेरी सारी हड्डिया टूट जायेगी। अरे छोडो बेटे देखो काफी देर से दूधवाला आवाज लगा रहा है।

(उसी दौरान फोन बजता है। विजय सूबीराम को पीठ से उतारकर फोन उठाता है।)

सुबीराम लाओ फोन मुझे दो बेटे।

(विजय फोन कान से लगाकर ध्यान से सुनता है)

फोन मुझे दो विजय बाबू, देखता हू किसका फोन है।

विजय *आ–अ–आ*

सुबीराम अगर विमल बाबू का फोन हुआ तो वो मुझ पर बरस पडेगे। लाओ मैं बात करता हूँ।

(सुबीराम विजय के हाथ से जबरदस्ती फोन लेकर)

देखा किसी ने फोन रख दिया।

विजय आ–अ–आ

(सुबीराम फोन रखकर बाहर की ओर निकल जाता है फिर से फोन बजता है अन्दर से ममता का प्रवेश करके फोन उठाना।)

ममता — हैलो कौन साहब बोल रहे हैं ? जी मैं दीवानचन्दजी की सुपुत्री ममता बोल रही हू जी हा बारात ठीक सात बजे रवाना होकर रामसदन भवन पहुचेगी जी हॉ।

(रिसीवर रखकर)

अन्दर जाओ विजय भैया अगर विमल भैया ने तुम्हे इस कमरे मे देख लिया तो महाभारत छिड जायेगी। मैं जरा सुनीता से मिलकर आ रही हू।

(विजय अन्दर जाने लगता है ममता का बाहर की ओर प्रस्थान उसी क्षण फोन फिर बजता है विजय फोन उठाता है कि विमल का प्रवेश। विमल विजय के हाथ से फोन छीनकर)

विमल — हैलो ! कौन ? मैं विमल हैलो हैलो

(फोन रखता है विजय टेप ऑन करता है गाना बजता है—आज मेरे यार की शादी है।)

विमल — यहा कोई शादी वादी नहीं है चलो भागो यहा से।

(मुह बिगाडकर)

मेरे यार की शादी है।

(सुबीराम का प्रवेश)

एक घण्टे से फोन बज रहा था कहा थे आप ?

सुबीराम — दूध वाला आवाज लगा रहा था मैं जरा दूध लेने चला गया था।

(उसी दौरान विजय का कमरे मे आना)

विमल — कितनी बार कह चुका हू कि इस कमबख्त को इस कमरे मे मत घुसने दिया करो।

सुबीराम — मैं पूरा पूरा ध्यान रखता हू छोटे सरकार लेकिन जब भी कमरे में टेलीफोन की घण्टी सुनाई पडती है विजय बाबू

चुपके से इस कमरे मे चले आते हैं।

(चिल्लाते स्वर मे)

विमल — तो फिर क्या ध्यान रखते हैं आप ? मैं जब भी देखता हू, यह हरामखोर इसी कमरे मे घुसा रहता है।

सुबीराम — तो इसमे इतना आपको नाराज होने की कौनसी बात है छोटे सरकार। आप अच्छी तरह जानते हैं कि विजय बाबू की बीमारी ही ऐसी है।

विमल — बीमारी ही ऐसी है ! हरामखोर जानबूझकर पागल बना हुआ है। अगर पागल है तो गोबर तो नहीं खाता।

(बिगडते हुए)

सुबीराम — छोटे सरकार विजय बाबू आखिर आपसे उम्र मे बडे हैं।

(बीच मे ही गिरेबान पकडते हुए)

विमल — बूढे खूसट ! मेरा खाकर मेरे सामने गुर्राता है। *(धकेलते हुए)* चल लेजा इसको यहा से और आइन्दा यह पागल इस कमरे मे

(विजय जानबूझकर गुलदस्ता फर्श पर फेककर तोड डालता है और सोफे पर चढकर बैठ जाता है।)

अब आप खडे खडे मेरा थोबडा क्या देख रहे हैं। जल्दी से दफा करो इसे यहा से और ध्यान से सुनो आज के बाद इस पागल को इस कमरे मे रेगता हुआ देख लिया तो मैं तुम्हारी चमडी उधेड डालूगा।

(विमल का अन्दर प्रस्थान)

सुबीराम — अन्दर चलो बेटे आपको कितनी बार समझाया है कि इस कमरे मे नहीं आया करते। यह मेहमानो के उठने बैठने का कमरा है।

(सुबीराम विजय का हाथ पकडकर अन्दर ले जाने की कोशिश करता है लेकिन विजय अन्दर जाने से इकार करता है।)

देखो बेटे अच्छे बच्चे जिद नहीं करते। अन्दर चलो मैं

तुम्हे नाश्ता देता हू।

(विजय फिर भी अन्दर जाने से मना करते हुए)

विजय आ–अ–आ।

सुबीराम हा–हा मैं समझ गया बेटे ! फोन आया तो छोटे सरकार सुन लेगे। आप अन्दर चले नाश्ता पडा ठडा हो रहा है। चलो बेटे मैंने बोला न समझदार बच्चे जिद नहीं किया करते।

(विजय फिर से अन्दर जाने के लिए मना करता है उसी बीच विमल कमरे मे प्रवेश करके।)

विमल यह हरामखोर ऐसे अन्दर नहीं जाएगा। इसकी दवा मैं करता हू।

(विमल पेट से बेल्ट निकालकर विजय को मारने लगता है सुबीराम बीच मे पडते हुए)

सुबीराम नहीं नहीं छोटे सरकार। इस बार माफ कर दीजिए आइन्दा मैं

(बीच मे ही)

विमल आप हट जाइए हमारे बीच से। मैं आज इसकी चमडी उधेड डालूगा।

सुबीराम नहीं नहीं। छोटे सरकार भगवान के लिए इस बार माफ कर दीजिए। मैंने बोला ना आइन्दा मैं इनको इस कमरे मे कभी नहीं आने दूगा।

(विमल सुबीराम को जोर से एक ओर धकेलते हुए)

विमल आप तो हमेशा ही इसकी हिमायत करते हैं और यह पागल तुम्हारी एक नहीं सुनता।

(विमल विजय को मारने लगता है कि उसी क्षण बाहर से ममता प्रवेश करते हुए)

ममता विमल भैया ! क्यों मार रहे हो विजय भैया को ? इनको ईश्वर ने पहले से ही मार रखा है।

विमल तू इसकी पैरवी मत कर। मैं आज इस हरामखोर का

पागलपन हमेशा के लिए दूर किए देता हू।

(विमल बेल्ट मारता है ममता बेल्ट छीनते हुए)

ममता पागल तो तुम हुए जा रहे हो। खबरदार अगर अब भैया पर हाथ चलाया।

विमल क्या कर लेगी तू ? हट जा हमारे बीच से।

(आगे आते हुए)

ममता नहीं हटती तुम मेरा क्या कर लोगे ? *(इशारा करते हुए)* सुबी चाचा आप विजय भैया को अन्दर ले जाइए। अब मैं देखती हू यह विजय भैया पर हाथ कैसे उठाते हैं।

विमल तो तू मेरा मुकाबला करेगी ?

ममता हॉ क्यो क्या जुल्म किया है विजय भैया ने जो मरे जानवर की तरह तुम भैया की चमडी उधेड रहे हो ?

(सुबीराम विजय को अन्दर लेकर जाता है।)

विमल हजार बार कह चुका हू कि इस पगले को कमरे मे मत घुसने दिया करो लेकिन किसी के कान पर जू तक नहीं रेंगती। अगर आइन्दा वह हरामखोर इस कमरे मे

(बीच मे बात काटते हुए)

ममता बार–बार बडे भैया को हरामखोर कहते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए। मत भूलो कि विजय भैया तुमसे उम्र मे चार वर्ष बडे हैं। क्या हुआ अगर कुदरत ने इनको लाचार और बेबस बना डाला। विजय भैया पैदायशी तो पागल नहीं।

(बिगडते हुए)

विमल विजय तो पागल है लेकिन वो बुडढा तो पागल नहीं। भैंसे की तरह खाता है और करता कुछ नहीं।

(व्यग्यात्मक)

ममता कितने अच्छे लग रहे हो पिता तुल्य चाचा को ये शब्द कहते हुए। यही है तुम्हारा बडप्पन ?

(भडकते हुए)

विमल	तुम तो मेरे साथ बहुत अच्छा सलूक कर रही हो।

ममता	इसान बुरा कह कर ही बुरा सुनता है।

विमल	ठीक है अब भाषण देना बन्द करो और जाकर सभालो उस पागल को कहीं वो मर तो नहीं गया ?

(बिगडकर)

ममता	जुबान को लगाम दो भैया। मरे भैया के दुश्मन। यह मत भूलो कि विजय भेया भी सेठ दीवानचन्द का बेटा है किसी रखैल का नहीं।

विमल	विजय भेया की चहेती

(विमल ममता को मारने के लिए हाथ उठाता है उसी क्षण विजय प्रवेश कर विमल के बाल पकड लेता है और पीछे की ओर घसीटता है। विमल अपने-आप को छुडाने की कोशिश करता है।)

ममता	शाबाश भैया। यह लो इनकी दादागिरी हमेशा के लिए खतम कर दो।

(विजय विमल को बेल्ट से मारना शुरू कर देता है लेकिन उसी क्षण सुबीराम प्रवेश करके बीच मे पडता है।)

सुबीराम	छोड तो विजय बेटे। समझदार लोग ऐसा नहीं किया करते। छोड दो बेटे तुम्हे मेरी कसम तुम्हारे सुबीचाचा की कसम।

ममता	आप बीच मे मत पडिए चाचा।

(विमल डरकर विजय से हाथ छुडाकर बाहर की ओर भाग जाता है।)

सुबीराम	जो भी हुआ अच्छा नहीं हुआ बेटी।

ममता	मैं तो कहती हू आज बहुत अच्छा हुआ चाचा सच पूछो तो मुझे तो मजा आ गया।

(बीच मे ही बात काटकर)

सुबीराम	तुम समझदार होकर ऐसी बात कर रही हो बेटी ?

ममता	नहीं तो क्या। बरदाश्त की भी एक हद होती है।

सुबीराम बुरे के साथ बुरा नहीं हुआ करते बिटिया । फिर अच्छे और बुरे में फर्क क्या रह जाएगा ?

ममता वो सब पुरानी मान्यताए है सुबी चाचा। आज के युग मे अच्छे के साथ अच्छा और बुरे के साथ बुरा हुए बिना काम ही नहीं चलता।

सुबीराम वो तो ठीक है बेटी लेकिन आज के दिन

(बीच मे बात काटकर)

ममता आप मेहरबानी करके विजय भैया को अन्दर ले जाइए। क्या अच्छा है और क्या बुरा मैं अच्छी तरह से जानती हू।

(सुबीराम व विजय का अन्दर की ओर प्रस्थान उसी दौरान फोन बजता है)

ममता हैलो कौन साहब बोल रहे हैं ? जी डैडी किसी जरूरी काम से बाहर गए हुए हैं। जी मैं जरूर बोल दूगी अगर ज्यादा ही जरूरी है तो आप उनसे 2206205 पर बात कर सकते हैं।

(ममता फोन रखती है एक गठरी लिये सुबीराम का कमरे मे प्रवेश)

अरे आप कहा चल दिए चाचा ?

सुबीराम मैंने अपने गाव जाने का फैसला कर लिया है बेटी मालिक के आने पर बोल देना कि

(बात को काटते हुए)

ममता एकाएक यह गाव जाने का फैसला आखिर बात क्या हुई चाचा ?

सुबीराम अब इससे ज्यादा क्या बुरा होगा बेटी जिन हाथो से विमल बाबू को खिलाया–पिलाया बडा किया और आज वो ही हाथ।

(बीच मे बोलकर)

ममता नहीं–नहीं चाचा । विमल भैया की तरफ से मैं आपसे

माफी माग रही हू।

सुबीराम देखो वेटी मैं तुम लोगो से नाराज होकर थोडे ही जा रहा हू। मैं जहा भी जाऊगा हमेशा आप लोगो के साथ ही रहूगा। वैस भी वहुत बूढा हो चला हू। काम करने के लायक भी नहीं रहा।

(रोते हुए)

ममता देखो चाचा मैं आपको कहीं नहीं जाने दूगी। आखिर हमारा भी कुछ अधिकार है आप पर।

सुबीराम मेरी चमडी उधेड ले तो मैं उफ तक न करू बेटी लेकिन विजय बाबू की यह दशा मुझसे देखी नहीं जाती। जब इच्छा हुई उन पर कोडे वरसाना शुरू कर देते हैं। आखिर विजय बावू इनसान हैं जानवर तो नहीं।

(बीच मे बोलते हुए)

ममता आज जो भी हुआ अच्छा नहीं हुआ चाचा। लेकिन आइन्दा ऐसी नौबत नहीं आएगी। मैं जीवनभर कुआरी रहकर विजय भैया की देखभाल करूगी।

सुबीराम मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है बेटी। मैंने बोला ना बहुत बुडढा हो चला हू, अब काम करने के लायक भी नहीं रहा। गाव जाकर चार दिन आराम से

(बात काटते हुए)

ममता नहीं—नहीं चाचा। डैडी के आते ही मैं विमल भैया की जरूर शिकायत करूगी।

(उसी क्षण अन्दर से विजय का आना)

देखो विजय भैया सुबी चाचा हमे छोडकर अपने गाव जा रहे हैं।

(ममता रोने लगती है। विजय दोनो हाथ फैलाकर दरवाजे के आगे खड़ा हो जाता है। सुबीराम आखे पोछते हुए।)

सुबीराम मत रो बिटिया। मैं कहीं नहीं जाऊगा। जाऊ भी तो कहा जाऊ बेटी। तुम लोगो के सिवाय कौन है इस दुनिया मे

मेरा। आठ साल का था तब से इसी हवेली मे काम कर रहा हू बेटी लेकिन इससे पहले मेरे साथ कभी बुरा सुलूक नहीं हुआ।

(आखे पाछकर)

ममता आगे से भी नहीं होगा चाचा। आप जानते हैं चाचा ! डेडी और *विमल भैया ने मिलकर सेठ मनोहरलालजी के साथ* कितना बडा विश्वासघात किया है ?

सुबीराम मैं सब जानता हू बेटी। कल रात मालिक छोटे सरकार को समझा रहे थे कि ग्यारह लाख नगद व एक किलो सोने के लिए तुम आखिरी वक्त तक अडे रहना। बाकी मैं सब सम्भाल लूगा।

ममता यही बात मैं सुनकर आई हू चाचा। अगर यह सच है तो सुनीता बरबाद हो जाएगी क्योकि सुनीता के मेहदी लग चुकी है और मैं अच्छी तरह जानती हू, सुनीता के पिताजी ऐन वक्त पर इतनी बडी रकम का बदोबस्त किसी भी हालत मे नहीं कर सकते।

सुबीराम चिन्ता मत करो बेटी। ईश्वर सब ठीक करेगा। उसके यहा देर हो सकती है अन्धेर नहीं।

ममता लेकिन अब देर से काम नहीं चलेगा चाचा। क्योकि विमल भैया बडे ही सकीर्ण विचारो के हैं। विमल भैया के साथ सुनीता कभी सुखी नहीं रह पाएगी

खैर छोडो चाचा आप अन्दर जाइए। डैडी और विमल भैया को सबक अब मैं सिखाऊगी।

(विजय, सुबीराम को खींचता हुआ अन्दर ले जाता है। ममता फोन करने लगती है कि बाहर से दीवानचन्द का प्रवेश।)

दीवानचन्द अरे ममता बेटी तुम कॉलेज नहीं गई ?

ममता मैंने कॉलेज छोडने का फैसला कर लिया है डैडी।

दीवानचन्द एकाएक कॉलेज छोडने का फैसला और मुझसे पूछे बगैर ?

ममता आज के बाद मैं घर मे ही रहूगी और विजय भैया की

देखभाल करूगी।

दीवानचन्द विजय की देखभाल तो होती रहेगी लेकिन कॉलेज छोडने से क्या फायदा ? और फिर विजय की देखभाल के लिए सुबीराम जो है और सुबीराम से विजय खुश भी रहता है।

ममता बहुत खुश रहते हैं विजय भैया लेकिन कोई किसी को खुश रहने भी दे ?

दीवानचन्द अरे भई कौन मना करता है उसे ?

ममता अगर भूल से विजय भैया इस कमरे मे आ जाते हैं तो विमल भैया उनकी चमडी उधेड डालते हैं। यह जुल्म नहीं है ? विजय भैया पैदायशी तो पागल नहीं हैं। विजय भैया पागल कैसे हुए हैं कौन नहीं जानता ? आप अन्दर चलकर देखिए मार–मारकर क्या हालत बनाई है विजय भैया की। और तो और आज विमल भैया ने सुबीराम चाचा पर भी हाथ उठाया।

(बाहर से विमल का प्रवेश)

विमल क्या बात है डैडी ?

दीवानचन्द यह मै क्या सुन रहा हू विमल ? तुमने सुबीराम पर हाथ उठाया ?

विमल क्या करता डैडी। जब देखो वह कमबख्त इसी कमरे मे घुसा रहता है और वह बुडढा उस पगले का बिल्कुल ध्यान नहीं रखता।

(बिगडते हुए)

ममता *विमल भैया !*

विमल उसी बुडढे ने सर पर चढा रखा है उस पागल को। हजार कहने के बावजूद वो

(बीच मे)

दीवानचन्द विजय नासमझ है। उसे प्यार से समझा दिया होता।

(झुझलाते हुए)

विमल कितनी बार समझाऊ डैडी। आए दिन नुकसान पर

(बात काटते हुए)

ममता क्यो झूठ बोल रहे हो विमल भेया ? विजय भैया इस कमरे मे आते ही कब हैं ? और क्या हुआ अगर विजय भेया कमरे मे आ भी जाए। विजय भेया भी फैमिली मेम्बर हैं। उनका भी उतना ही हक है इस घर मे जितना तुम्हारा और मेरा।

(बिगडते हुए)

विमल बडी आई हो अपना हक जताने वाली। यही है एक बडे भाई के साथ बात करने का तरीका ? तुम्हीं लोगो ने सर पर चढा रखा है उस पागल को।

(बिगडते हुए)

ममता बार–बार बडे भैया को पागल कहते हुए तुम्हे शर्म नहीं आती ? विजय भैया उम्र मे तुमसे चार वर्ष बडे है।

विमल तुम कौनसा बडो का लिहाज कर रही हो। कैंची की तरह जुबान चला रही हो। मैं भी तुमसे चार साल बडा हू।

ममता लेकिन सुबी चाचा तुमसे चालीस बर्ष बडे हैं।

` (तेज स्वर मे)

विमल फिर भी वो हमारा नौकर है मालिक नहीं। और एक नौकर की घर मे औकात क्या होती है ?

ममता आसमान में थूकना अच्छा नहीं विमल भैया। सुबी चाचा अपनी मेहनत की खाते हैं। हमारी तुम्हारी तरह मुफ्त की नहीं।

(ममता का तेज रफ्तार से बाहर की ओर प्रस्थान)

विमल देख लिया डैडी किस तरह मुकाबला करने लगी है ?

दीवानचन्द सब देख रहा हू कि तुम लोग मेरे होते हुए भी अपनी अपनी जिम्मेदारिया कैसे निभा रहे हो।

(उसी क्षण फोन बजता है दीवानचन्द रिसीवर उठाकर)

दीवानचन्द बोल रहा हूँ, कौन ? मनोहरलालजी कहिए कैसी तैयारिया चल रही हैं ? क्या ! तो और कोशिश

कीजिए। अभी तो रात पडने मे काफी समय पडा है। मैं कुछ नहीं जानता। मेरी बला से आप कुछ भी कीजिए मुझे तो मेरी मागी गई रकम का बन्दोबस्त करके दीजिए।

(फोन रखते हुए।) भिखमगा कहीं का।

विमल वो क्या कह रहा था डैडी ?

दीवानचन्द बोल रहा था अभी तक बन्दोबस्त नहीं हुआ।

विमल आप उस कजूस की औलाद को साफ साफ कह दीजिए डैडी कि मागी गई रकम के अलावा मारुति

(बीच मे बोलते हुए)

दीवानचन्द अरे उसकी चिन्ता तुम क्यो कर रहे हो। मैं उसका वैसे भी पिण्ड छोडने वाला नहीं हू। अगर बेटी का सुख चाहता हे तो सब करेगा वरना उमभर बर्तन साफ करेगी। मैं तुम्हारी दूसरी शादी करवा दूगा। तू जा और सेठ केदारनाथ को लेकर आ क्योकि वो उसकी वकालत ज्यादा ही कर रहा था।

(विमल बाहर की ओर जाता है और दीवानचन्द अन्दर की ओर जाता है बाहर से ममता का प्रवेश। फोन बजता है।)

ममता हेलो। कौन साहब बोल रहे हैं कौन केदार अकल ? मै ममता बोल रही हू।

दीवानचन्द किसका फोन है ?

(फोन रखते हुए)

ममता मेरी सहेली उर्मिला बोल रही थी। मैंने पलवीन्दर और जसवीर कौर को बारात के लिए इन्वाइट किया है

दीवानचन्द मैं विमल की शादी बिल्कुल सादगी के साथ कर रहा हू इसलिए हर किसी को इन्वाइट करने से क्या फायदा ? वैसे भी सरकार ने आजकल लम्बी बरात पर पाबन्दी लगा रखी है।

ममता कितने नेक विचार है आपके। फिर भी दस बीस नाते रिश्तेदारो को तो इन्वाइट करना ही पडेगा लेकिन आप तो इस कदर बेफिक्र बैठे हैं जैसे विमल भैया की

शादी आज नहीं अगले महीने की बाईस तारीख को है।

दीवानचन्द मेरे तो लडके की शादी है। तैयारी तो लडकी वालो को करनी है। अपना क्या घोडी मगवाई और पहुँचे लडकी के यहा।

ममता वो ता ठीक हे डैडी लेकिन विमल भेया की शादी बार बार तो होने से रही इसलिए शादी विवाह मे थोडा बहुत धूम धमाका तो हाना ही चाहिए। न तो आपने कोठी पर कोई सजावट की और न ही आपने किसी रिश्तेदार को इन्वाइट किया। आखिर आप लोगो का इरादा क्या है ?

(हसते हुए)

दीवानचन्द अरे पगली ! रिश्तेदार कोई विलायत से थोडे ही आएगे। वैसे उन्हे इत्तला तो कर ही रखी है। बस फोन करते ही पहुच जाएगे। इसके अलावा जमाना बहुत बदल गया है बेटी। अब तो शादी विवाह के मामले मे जितनी सादगी बरती जाए उतना ही अच्छा है।

ममता अगर आप जैसे पैसे वाले लोग इतनी सादगी बरतने लगेगे डैडी तो गरीब लोगो को जरूर राहत मिलेगी।

दीवानचन्द समय के साथ साथ इनसान को बदलना ही चाहिए बेटी।

ममता रियली आप महान हैं। आपको तो किसी स्टेट का मत्री होना चाहिए था।

दीवानचन्द अगर इस बार पार्टी का टिकिट मिल गया तो चुनाव लडने की भी सोच रहा हू।

ममता इसमे सोचने की कौनसी बात है ? कुछ ले देकर टिकट

(बीच मे बोलते हुए)

दीवानचन्द अरे पिछली बार पचास लाख तक की ऑफर कर दी थी लेकिन ऐन वक्त पर वो हलवाई का बच्चा बीच मे अटक गया वरना

ममता अगर बुरा न माने तो मेरा एक सुझाव है डैडी। आप सेठ मनोहरलालजी से ग्यारह लाख नगद की जगह पूरे इक्यावन लाख क्यो नहीं माग लेते। बाकी इन मारुति वारुति

मे क्या पडा है। वो रकम आपके चुनाव मे काम आएगी।

दीवानचन्द तो तुम्हे भी इस बात का पता चल गया है कि मैंने मनोहरलाल से ग्यारह लाख की माग की है ?

(बीच मे ही)

ममता इस बात का मुझे तो क्या पूरे समाज को मालूम चल गया है कि सेठ दीवानचन्दजी कितने बडे धर्मात्मा है और समाजसेवी हैं।

(बिगडते हुए)

दीवानचन्द तुम मेरी औलाद हो। मेरी अफसर नहीं। बिजनेस के मामले में इसान को क्या क्या करना पडता है।

(पास आते हुए)

ममता कौनसा बिजनेस ? जिसको हिन्दी मे दहेज कहते हैं ?

(उठते हुए)

दीवानचन्द तो मुझे कौनसा तुम्हारी शादी मे देना नहीं पडेगा।

ममता मैं उन दरिन्दो के यहा कभी बहू बनकर नहीं जाऊगी डैडी जो पैसो को ही माई बाप समझते हैं। मेरे लिए आपको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है इतनी ऊची हवेली है आपकी जब चाहूगी छलाग लगा लूगी।

(तेज स्वर मे)

दीवानचन्द तुम चार जमात क्या पढ गई हो तुम्हे छोटे बडे किसी का लिहाज नहीं रहा ? मैं जैसा उचित समझूगा वैसा ही करूगा समझी तुम ?

ममता बहुत अच्छी तरह समझ गई हू मैं लेकिन आप समझ नहीं पा रहे हैं क्योकि जमाना बहुत तेज गति से आगे बढ रहा है। अब विमल भेया को न तो सुनीता मिलगी और न एक फूटी कौडी

(ममता तेज रफ्तार से बाहर की ओर निकल जाती है दीवानचन्द चिल्लाते स्वर मे)

दीवानचन्द कहा जा रही हो तुम ? सुना नहीं तुमने ? सुबीराम

विमल ! कहा मर गए सब के सब लोग ?

(बाहर से केदारनाथ का प्रवेश)

दीवानचन्द आइए पधारिये सेठ साहब ! जय रामजी की।

केदारनाथ जय तो आपकी बोलनी चाहिए दीवानचन्दजी।

दीवानचन्द मेरी जय ? मैं समझा नहीं।

केदारनाथ मैं मनोहरलालजी के यहॉ होकर आया हूँ। आप द्वारा की गई माग मोटी है और मनोहरलालजी अभी उस पोजीशन मे नहीं हैं क्योकि इतनी बडी रकम जुटाने के लिए समय बहुत कम है। शादी के बाद वे आपकी माग पूरी कर देगे।

दीवानचन्द राजस्थानी मे कहावत है सेठा 'पछै रो पीछोकडो । यह काम समय पर ही हो जाना चाहिए बाद मे कोई किसी को नहीं पूछता।

केदारनाथ हर आदमी अपनी इज्जत बचाना चाहता है। मनोहरलालजी जुबान के धनी हैं थोडा समय दीजिए आपकी माग पूरी कर देगे।

दीवानचन्द मेरे पास दो टूक एक ही जवाब है–मेरी माग पूरी करो वरना मेरे यहाँ से बारात रवाना नहीं होगी। आप जाकर कह दीजिए।

केदारनाथ आसमान मे थूकना अच्छा नहीं है दीवानचन्दजी। पैसा हाथ का मैल है। आज यहॉ कल कहाँ का कोई पता नहीं है।

दीवानचन्द ये मुहावरे मैंने बहुत सुन रखे हैं। आप मनोहरलालजी के धर्मभाई बने हुए हैं आप उनकी क्यों नहीं मदद कर देते ?

केदारनाथ दीवानचन्दजी सब को एक ही लाठी से मत हाकिये। मैं आपका दबैल नहीं हूँ। आप अपने अतीत को याद कीजिए पाच वर्ष पहले आपकी क्या हालत थी सब भूल गए ? दिन मे दस बार मनोहरलालजी की हाजरी बजाया करते थे और आज उनकी इज्जत लेने पर तुले हैं ?

दीवानचन्द आपका कहना है कि मैं इनसान नहीं दरिन्दा हूँ।

केदारनाथ आदमी तो आप बहुत बढिया हैं लेकिन पहले लोग आप

जैसे घटिया नहीं होते थे। मैं चलता हूँ।

(केदारनाथ का बाहर की ओर प्रस्थान और सुवीराम का प्रवेश)

सुवीराम क्या हुक्म है मालिक ?

दीवानचन्द कहाँ मर गए थे तुम लोग ? पता लगाओ ममता कहा गई है।

(सुवीराम का प्रस्थान और मनोहरलाल का हाथ मे ब्रीफकेस लिए प्रवेश)

दीवानचन्द पधारिए पधारिए सेठ साहब। वडी लम्बी उम्र पाई है। अभी अभी याद किया था आपको। बैठिए ना खडे क्यो हैं ? सब तैयारिया पूरी हो गई ? भई हम तो लडके वाले हैं आपका इशारा हुआ नहीं कि पहुँचे बरात लेकर।

मनोहर सेठ साहब इतने कम समय मे इतनी वडी रकम की व्यवस्था मै कैसे कर सकता हूँ ?

दीवानचन्द फिर भी कितना लेकर आए हो ?

मनोहर लाने को तो मेरे पास क्या है सेठ साहब ! बस मैं अपनी इज्जत लेकर आया हू।

दीवानचन्द पहेलिया न बुझाइए मनोहरलालजी। साफ साफ कहिए मेरी मागी गई रकम का क्या हुआ ?

(ब्रीफकेस खोलकर देखता है और पगडी देखकर मनोहरलाल के मुँह पर फेकता है)

मुझे उल्लू बनाना चाहते हो ? मैं पूछता हू, रकम का क्या हुआ ?

मनोहर अभी तो मुझ से कुछ भी नहीं बन पडा है सेठ साहब लेकिन सुनीता की शादी के बाद मैं आपकी पाई पाई चुका दूगा।

दीवानचन्द तो अपने झोली झण्डे उठाइए और दफा हो जाइए यहा से। मैं विमल के लिए दूसरी लडकी तलाश कर लूगा।

मनोहर नही नहीं सेठ साहब सुनीता की शादी के बाद मैं अपना

मकान जायदाद सब बेचकर आपकी पाई पाई चुका दूगा।

दीवानचन्द अगर तुम्हे मकान ही बेचना है तो अभी क्यो नहीं बेच डालते ?

मनोहर लेकिन सुनीता बेटी की शादी के पहले में यह कैसे कर सकता हूँ ? लोग बाग क्या सोचेंगे ? सुनीता बेटी के मेहन्दी लग चुकी है।

दीवानचन्द मेहन्दी लग चुकी है तो दो तीन वार साबुन से हाथ धुलाइए मेहन्दी उतर जाएगी।

मनोहर यह आप क्या कह रहे हैं सेठ साहब ?

दीवानचन्द बिल्कुल ठीक कह रहा हू मैं। एक बात और ध्यान से सुन लो। मेरे यहा से बारात तब तक रवाना नहीं होगी। जब तक तुम मागी गई रकम का बन्दोबस्त

(बीच मे गिडगिडाते हुए)

मनोहर अब एन वक्त पर मैं किसके आगे जाकर हाथ फैलाऊ सेठ साहब ! अगर ऐसा ही था तो यह सब आपको पहले बतलाना चाहिए था।

दीवानचन्द मैं क्या बतलाता तुम्हे दिखाई नहीं दे रहा था कि मैं अपनी लडकी का रिश्ता किसके यहा कर रहा हू ? उस वक्त तो विमल को देखते ही चिल्ला उठे मुझे लडका पसन्द है। तुम्हे मालूम होना चाहिए मनोहरलालजी हाथी का शौक पालने वाला मकान का दरवाजा बडा बनवाकर रखता है।

मनोहर मैं सब जानता हू सेठ साहब लेकिन

(बात को काटते हुए)

दीवानचन्द जानते हैं तो जाइए और जब रकम का बन्दोबस्त हो जाए मुझे कहला दीजिएगा। मैं बारात लेकर पहुच जाऊगा।

(पैरो मे पडते हुए)

मनोहर लेकिन सारे मेहमान इकटठे हो गए हैं सेठ साहब ! वो क्या सोचेगे ?

दीवानचन्द सोचेगे क्या मौके का फायदा उठाइए और सब से पचास पचास हजार उधार माग लीजिए। तुम्हारा काम भी निकल जाएगा और तुम्हे यह भी पता चल जाएगा कि उस भीड म तुम्हारा सच्चा हमदर्द कौन है।

(हाथ जोडते हुए)

मनोहर आप समझदार होकर ऐसी गलत बात कर रहे हैं सेठ साहब।

दीवानचन्द इसमें गलत क्या है ? शादी विवाह के मौके पर उधार सुधार कौन नहीं लेता और पैसा उधार लेकर तुम जुआ थोडे ही खेल रहे हो ?

मनोहर नहीं नहीं सेठ साहब। मैं इतना गिरा हुआ इनसान नहीं हू।

दीवानचन्द गिरे हुए नहीं हो तो कोई दूसरा लडका तलाश कर लीजिए। मैं भी विमल के लिए दूसरी लडकी तलाश कर लूगा।

(दोनो हाथ जोडकर)

मनोहर नहीं नहीं सेठ साहब। अगर सुनीता बेटी को इस बात का पता लग गया तो वो कुछ कर न बैठे।

दीवानचन्द इसमें मेरी कोई जिम्मेवारी नहीं। मेरी बला से वो कुछ भी करे। मेरे कौनसी बेटी नहीं। मुझे कौनसा अपनी बेटी को देना नहीं पडेगा।

(गिडगिडाकर)

मनोहर अगर आप बारात लेकर नहीं पधारे सेठ साहब तो मैं कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहूगा।

दीवानचन्द तो तुम्हारी इज्जत बचाने के लिए मैं अपनी नाक कटवा लू ? लोग बाग मुझे ताना नहीं मारेगे कि इतने बडे बाप का बेटा है दहेज मे उसे क्या मिला ?

(गिडगिडाते हुए)

मनोहर अब मैं कौनसा मुह लेकर घर जाऊ सेठ साहब ?

दीवानचन्द तो घर जाना जरूरी है ? रास्ते मे नदी नाले बहुत हैं।

(बिगडते हुए)

मनोहर सेठ साहब ! *(फिर दोनो हाथ जोडकर)* नहीं नहीं सेठ साहब मुझे बचा लीजिए। सुनीता बेटी को बचा लीजिए अगर सुनीता बेटी मेहन्दी लगी रह गई तो कौन लडका उससे शादी करेगा ?

(उसी क्षण अन्दर से विजय का प्रवेश)

विजय सुनीता से शादी करने के लिए मैं तैयार हू सेठ साहब। बारात लेकर मैं आऊगा।

मनोहर विजय बाबू, आप ?

विजय हा सेठ साहब मैं विजय ! वो ही विजय जो बोल नहीं सकता था जिसकी जुबान बन्द थी।

(बीच मे ही)

दीवानचन्द घबराइए नहीं सेठजी यह भी मेरा ही बेटा है। पागल हुआ तो क्या हुआ ? आखिर लडका तो है।

मनोहर आप सही फरमा रहे हैं सेठ साहब। आप जैसे घटिया इनसान से यह पागल लाख अच्छा है। अब मै सुनीता बेटी की शादी करूगा तो इसी पागल के साथ करूगा और मुझे इस बात का आज पता चला कि शैतान के घर भी भगवान पैदा हो सकता है।

(चीखते स्वर मे)

दीवानचन्द इससे पहले कि तुम्हे धक्के मारकर यहा से निकलवाया जाए दफा हो जाओ यहा से।

विजय हा हा आप घर पधारिए सेठ साहब। मैं समय से पूर्व बारात लेकर आपके यहा पहुच जाऊगा।

मनोहर मै तुम्हारा इन्तजार करूगा बेटे।

विजय इतने छोटे न बनिए सेठ साहब। आज देश मे एक नहीं लाखो विजय मौजूद हैं। अब दहेज के अभाव मे कोई सुनीता कुआरी नहीं रहेगी।

(मनोहरलाल का बाहर की ओर प्रस्थान)

घर आए मेहमान के साथ आपको इस तरह का सुलूक नहीं करना चाहिए था।

दीवानचन्द लेकिन तेरी जुबान तो बन्द थी अब कैसे बोलने लगा तू ?

विजय मैं तो आज भी चुप ही रहना चाहता था। लेकिन आपकी बेरहमी के आगे मुझे अपनी जुबान खोलने को विवश होना पडा।

दीवानचन्द क्या बकवास कर रहा है तू।

विजय मैं गलत कहा हू, डैडी। अगर मैं आपके कहने पर सेठ जमनाप्रसाद के यहा बिकने को तैयार हो जाता तो आज मेरी यह हालत कभी नहीं होती।

दीवानचन्द क्या बक रहे हो तुम ?

विजय बिल्कुल सही कह रहा हू में क्योकि उस वक्त आपका प्रतिरोध करने की क्षमता मुझमे नहीं थी इसलिए सिवाय इसके कि मैं पागल बन जाऊ मेरे पास दूसरा कोई चारा नहीं था। न तो मैं उस वक्त पागल था और न

(बात काटते हुए)

दीवानचन्द तो तू जानबूझकर पागल बना हुआ था ? ढोगी !

विजय सही कह रहे है आप अगर मै पागलपन का ढोग नहीं करता तो आप मुझे भी विमल की तरह कभी का बेच डालते।

(बात काटते हुए)

दीवानचन्द भाषण बद कर हरामखोर।

विजय सच्ची बात हमेशा कडवी ही लगती है डैडी। जानते हैं आप ? जानवर भी अपना पेट भर जाने के बाद अपने अपने ठीए से हटकर दूर बैठ जाते हैं लेकिन समझ मे नहीं आता आप किसके खातिर पाप कमा रहे है। पहले से क्या कमी है आपके पास ? बुरे आप बन रहे हैं डेडी और भगवान जाने इस पाप की कमाई को खाएगा कौन ?

दीवानचन्द हरामखोर तू दो पैसे के आदमी के लिए अपने बाप की पगडी

(बीच मे)

विजय यही तो आपकी सबसे बडी कमजोरी है डेडी कि चादी के चन्द टुकडो के खातिर आप आदमी को आदमी नहीं समझ रहे हैं। अगर आप द्वारा मागी गई रकम का बन्दोबस्त कर दिया जाता तो मनोहरलालजी बहुत अच्छे आदमी थे और नहीं कर पाए तो

(चिल्लाते हुए)

दीवानचन्द मैं कहता हू, बकवास बन्द कर।

विजय आपके कहने से मैं तो चुप हो जाऊगा। लेकिन कल पूरा शहर आपके नाम पर थूकेगा। किस किस की जुबान बन्द करेगे आप ?

दीवानचन्द मजाल है कोई मेरे सामने एक शब्द भी

(बीच मे ही)

विजय आप बहुत बडी गलतफहमी के शिकार हो गए है लेकिन वक्त किसी को माफ नहीं करता डेडी।

दीवानचन्द कोई जरूरत नहीं है मुझे डेडी कहने की।

विजय सच मे आज मुझे भी आपको डेडी कहते हुए घृणा सी होने लगी है। क्योकि जब इसान इनसानियत को छोडकर शैतान बन जाता है तो उसका किसी के साथ कोई रिश्ता नहीं रह पाता है।

दीवानचन्द तो तुम मेरी औलाद नहीं या मैं तेरा बाप नहीं ?

विजय आप मेरे डैडी थे लेकिन आज के बाद मैं आपके लिए और आप मेरे लिए मर चुके हैं।

(विमल प्रवेश करके)

विजय क्या बात है डैडी ?

(बैठते हुए)

दीवानचन्द कुछ नहीं बेटे आज मेरी ही औलाद मेरी इज्जत लेने पर

तुली है।

विमल मैंने आपको पहले ही कहा था। विजय जानबूझकर पागल बना हुआ है।

दीवानचन्द तुमने सही कहा था बेटे लेकिन मैं ही बेवकूफ बन गया था।

विमल विजय पागल बनकर दुनिया को धोखा दे सकता है लेकिन मुझे नहीं।

विजय तुम भी दुनिया की नजरो मे सेठ दीवानचन्द के बेटे कहला सकते हो लेकिन विजय तुम्हे सेठ दीवानचन्द का बेटा मानने को आज तैयार है न कल।

(बिगडते हुए)

दीवानचन्द चुप कर हरामखोर।

विमल विजय क्या बकवास कर रहा है डैडी ?

विजय मै क्या बकवास कर रहा हूँ, डैडी अच्छी तरह समझ गए हैं कि तुम कौन हो और किसकी औलाद हो ?

(बिगडकर)

दीवानचन्द हरामखोर। मैं तेरे को

(गिरेबान पकडते हुए)

विमल अगर डैडी के साथ कोई बदतमीजी की तो अच्छा नहीं रहेगा विजय भैया।

(गिरेबान छुडाते हुए)

विजय खबरदार अगर इस गन्दी जुबान से मुझे भैया या भैया शब्द का उच्चारण किया। क्योकि तुम सेठ दीवानचन्द की औलाद नहीं बल्कि अनाथाश्रम से एडोप्ट किए हुए किसी की नाजायज औलाद हो।

(चीखते हुए)

विमल विजय भैया

दीवानचन्द हरामखोर तू मेरे खून पर शक करता है।

विजय तुम्हारा खून

(चीखते स्वर मे)

विमल विजय भैया और कोई शब्द मुह से निकाला तो अब मैं तुम्हारा कोई लिहाज नहीं करूगा।

विजय चुप ध्यान से सुन। डैडी आप बतला सकते हैं मेरे और ममता के होते हुए आपने विमल को क्यो अडोप्ट किया ?

दीवानचन्द मुझे लगता है वास्तव मे तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।

(तेज स्वर मे)

विजय आप मेरे सवाल का जवाब दीजिए मेरे और ममता के होते हुए आपने विमल को क्यो एडोप्ट किया ? इसलिए कि दस बीस हजार खर्च कर इसे पढा लिखा देगे और जवान हो जाने पर लाखो का दहेज मागकर वसूल कर लेगे ?

(छडी उठाकर मारते हुए)

दीवानचन्द हरामखोर मैं तुम्हारा सर फोड डालूगा।

(विमल बीच मे पडते हुए)

विमल यह आप क्या कर रहे है डैडी ?

दीवानचन्द छोड दे मुझे मैं इसकी शक्ल देखना नहीं चाहता।

(दीवानचन्द का तेज रफ्तार से अन्दर की ओर प्रस्थान)

विमल यह सब क्या है विजय भैया ?

विजय अगर सुनने की हिम्मत है तो ध्यान से सुन। मैंने जो कुछ भी कहा वो सच है। अगर तुम्हे मेरी बात का यकीन नहीं तो जाओ और अनाथाश्रम का सन् 1980 का रजिस्टर उठाकर देखो जिसमे तुम्हारी मा का नाम सावित्री लिखा हुआ है। जो बीस साल पहले हमारे घर की नौकरानी थी ओर तुम्हे हॉस्पिटल मे जन्म देने के बाद

विमल बस करो विजय भैया

विजय अगर तुम डैडी की बातो मे आकर अपने आप से इतना नहीं गिर जाते तो मैं आज भी अपनी जुबान बद रखता

और इस राज को राज ही रहने देता। क्याकि सुवी चाचा से सब कुछ जान लेने के बाद भी मैं आज तक तुम्हारे जुल्म सहता रहा।

(विमल का तेज रफ्तार से बाहर की ओर प्रस्थान उसी क्षण सेठ दीवानचन्द सुवीराम को कमरे मे धकेलते हुए)

दीवानचन्द नमकहराम ! चल निकल यहा से। जिस थाली मे खाता है उसी मे छेद करता है ?

(सुवीराम गिर पडता है विजय सुवीराम को उठाते हुए)

विजय डेडी सुवी चाचा यहा से कहीं नहीं जाएगे।

दीवानचन्द तू कौन होता है मुझे मना करने वाला ? मेरी मर्जी के खिलाफ मेरे घर मे कोई एक पल नहीं रह सकता।

विजय सुवी चाचा इस घर से जाए उससे पहले मैं ममता को लेकर यहा से चला जाऊगा।

(दोनो हाथ जोडकर)

सुवीराम नहीं नहीं छोटे सरकार मैं तो इस घर का गुलाम हू। कहीं भी चला जाऊगा। वैसे भी बहुत बुडढा हो चला हू। काम करने के लायक भी नहीं रहा।

(फैड आउट पूरे मच पर अन्धेरा और गोलाकर प्रकाश मे सूत्रधार खडा है।)

सूत्रधार देखा आपने इनसान का अच्छा बुरा किया जब उसके सामने आता है तो वो बौखला उठता है। मेरी तरह आप लोगो को भी सेठ दीवानचन्दजी की नीचता पर गुस्सा आ रहा होगा। लेकिन हम कर ही क्या सकते हैं। एक गुमराह को रास्ता दिखलाया जा सकता है। मगर लालची इनसान को नहीं। अमीर से अमीर आदमी सोने की रोटी नहीं खाता। आज नहीं तो कल हमे भी वह सब कुछ करना होगा जो आज हम दूसरो से उम्मीद रखते हैं। तो यह फिजूल का तनाव क्यो पैदा किया जाय ? इन बुराइयो इन कुरीतियो से छुटकारे के लिए सरकारी नियत्रण तो लगने से रहा। इन कुरीतियो पर लगाम तो

इनसान को अपने विवेक से ही लगानी होगी। *(जनता की ओर इशारा करते हुए)* क्या कहा आपने ? युवा पीढी यह बात जरा गले उतरने वाली है। क्योकि अगर युवा चाहे तो क्या नहीं कर सकता ? आखिर इस देश की बागडोर एक दिन युवा पीढी को ही सभालनी है। अगर युवा आगे बढकर दहेज का बहिष्कार कर दे तो किस मा बाप की हिम्मत है कि वो लडकी पक्ष से एक पैसे की भी माग कर दे अरे ! यह क्या ? पुलिस ! मैं तो चला

(पूरे मच पर प्रकाश और उसी क्षण बाहर की ओर से ममता पुलिस इन्सपेक्टर नीतासिह के साथ कमरे मे प्रवेश करती है।)

ममता इन्सपेक्टर साहब ये हे मेरे डैडी दीनदयाल सेठ दीवानचन्द।

(बिगडते हुए)

दीवानचन्द नालायक लडकी।

(अभिवादन करते हुए)

ममता थेंक्यू डेडी !

इन्सपेक्टर सेठ दीवानचन्दजी आपके खिलाफ रिपोर्ट है कि आपने अपने छोटे लडके विमलकुमार की शादी मे लडकी पक्ष से ग्यारह लाख नगद की माग की है डॉवरी एक्ट दफा न 498 A-406 के तहत यह बहुत बडा जुर्म बनता है।

(तेज स्वर मे)

दीवानचन्द मैंने किसी से कोई डिमाण्ड नहीं की। मै अपने बेटे की शादी पूरी सादगी के साथ कर रहा हू। देख नहीं रहे हैं आप ? बारात रवाना होने में एक घण्टा बाकी रह गया हे। मैंने अभी तक एक भी रिश्तेदार को नहीं बुलवाया है। इसके अलावा मेरे खिलाफ क्या सबूत है आपके पास ?

(विजय बीच मे बोलकर टेपरिकार्डर दिखाते हुए)

विजय डैडी की सादगी का सबूत मेरे पास है मेडम। मैंने अपने पिताजी की मधुर आवाज को इस मशीन मे कैद कर

लिया है।

(पुलिस इन्सपेक्टर टेप रिकार्डर ऑन करके सुनता है।)

इन्सपेक्टर क्यो सेठ साहब अब भी कुछ कहना है आपको ? ऐसा केस बनाऊगी कि जिन्दगीभर जेल के सीखचा से सर फोड फोड कर दम तोड दोगे। *(इन्सपेक्टर विजय व ममता की ओर देखते हुए)*।

रियली मैं तुम लोगो से बहुत प्रभावित हू। मिस्टर विजय अगर युवा वर्ग इस रोग को जड से नष्ट करने की प्रतिज्ञा करले ओर समय डैडीसमय पर कानून की मदद करता रहे तो आए दिन स्टोव फटने की ये घटनाए हमेशा के लिए बन्द ही नहीं हो जाएगी बल्कि हिन्दुस्तान से दहेज रूपी कैन्सर तो क्या देश मे किसी तरह का कोई क्राइम नहीं रहेगा। बहुत बहुत शुक्रिया मिस ममता पूरी युवा पीढी को नाज है तुम पर

चलिए सेठ साहब।

धीरे धीरे पूर्ण अन्धकार

आपके नाटक पढे अभिभूत हुई। राजस्थानी सस्कृति से ओत–प्रोत। पारिवारिक पृष्ठ भूमि 'मूढै बोले'। 'टैसीटोरी' पर आपने खूब लिखा जो सेवायें उनकी रही उस पर बीकानेर निवासियों ने बहुत कम लिखा। आपने उस कमी की भरपाई कर दी। वहा के उस समय के वातावरण का आपने सफल चित्राकन कर दिया। तीनों नाटकों ने मुझपर अपना प्रभाव डाला है।

'पीथल' भी पूरी मौलिकता लिये हुए है। वार्तालाप की भाषा पाठक को आकर्षित किये बिना नहीं रह सकती। भाषा जाहिर करती है कि दरबारी अथवा कोर्ट की तहजीब अदब कायदे से लेखक की कितनी वाकफियत है।

पद्मश्री डॉ लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत

सूरजसिंह पवार को मैं अभिनेता–निर्देशक तथा नाट्य लेखक के रूप मे अरसे से जानता हूँ। वह अगर नाट्य–लेखन और नाट्य प्रदर्शन को फिल्म के विरूद्ध चुनौती के रूप में लेता है तथा सामजिक समस्याओं की कथात्मक रोचकता से बाधकर सहज तथा मनोरजक रूप से दर्शकों तक पहुचाना चाहता है या पहुचाता है तो इसमें आपत्ति क्यो होनी चाहिये ? बल्कि उसकी लगन और निष्ठा की सराहना की जानी चाहिए। नाटकों में सपाट सहजता और प्रयोगात्मकता– दोनों की प्रवृतियों मिलती है जिसका कारण है उसका दीर्घ रग अनुभव। यही कारण है पवार के नाटकों में भीड़ उमडती है।

डॉ राजानन्द भटनागर

श्री पवार स्वय एक अच्छे अभिनेता हैं और उन्हें मचीय जीवन का लम्बा अनुभव है अत इस अनुभव की छाप भी इन एकाकियों पर दिखलाई पड़ती है। छोटे–छोटे सवाद गतिशील कथानाक भावोद्रेक करने वाली भाषा आदि बातें उन्हें मच के अनुकूल बनाती हैं।

डॉ किरण नाहटा

सामाजिक सरोकार की मनोवैज्ञानिक स्थितियों से हास्य उत्पन्न करने की लेखक की कोशिश कामयाब है। आज के व्यस्त युग में अमीर–गरीब नेता–अभिनेता छोटा–बड़ा अथवा ज्ञानी–अज्ञानी सभी लोग परेशान हैं अत इस गम्भीर वातावरण में इन्सान को दो क्षण की खुशी या हसने को मिल जाय तो इससे बढ़कर कोई औषधि नहीं।

हमीदुल्ला